जुड़ने और जोड़ने के लिए

कान्यकुब्ज वाणी

कण भौतिकी में भारतीय वैज्ञानिक एवं भारतीय दर्शन का योगदान

जेनेवा के C.E.R.N. के प्रांगण में स्थापित नटराज की प्रतिमा

परमाणु का सरलतम चित्रण

सत्येन्द्रनाथ बोस
वैज्ञानिक

होली मिलन समारोह 2012 की झलकियाँ

डा० शुक्ल द्वारा स्वागत

दीप प्रज्जवलन

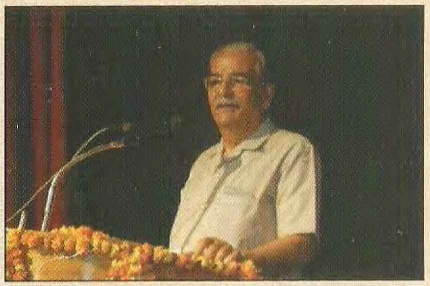

अध्यक्षीय सम्बोधन

मुख्य अतिथि का सम्बोधन

मेडिकल कालेज की प्रिन्सिपल डा० पी०के०मिश्रा

मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह

सम्मानित गण

१६ दिसम्बर की काली रात

''औरत संसार की किस्मत है फिर भी तकदीर की हेटी है, अवतार पयम्बर जनती फिर भी शैतान की बेटी है।''

पूर्व के अंकों में पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर एक स्तुति रहती थी। परन्तु इस बार इस पृष्ठ पर समाज की सबसे काली तस्वीर प्रस्तुत है।

१६ दिसम्ब २०१२ को जब सारा भारत विजय दिवस मना कर आराम के मूड में आ रहा था उसी समय रात लगभग ०६.३० पर देश की राजधानी में चलती बस पर एक छात्रा के साथ बलात्कार हो रहा था। स्त्री पर बढ़ते अत्याचारों और इस घटना की हैवानियत सुन कर किशोरावस्था में सुन एक गीत याद आ गया -

'औरत ने जन्म दिया मर्दों को मर्दों ने उन्हें बाज़ार दिया, जब जी चाहा मसला, कुचला, जब जी चाहा दुत्कार दिया।

१६५८ का यह गीत समाज के कोढ़ वैश्यावृत्ति को रेखांकित करता है। वैश्यावृत्ति उस समय नारी के विरुद्ध सबसे बड़ा अत्याचार माना जाता था। बलात्कार उस समय भी होते थे पर दबा दिये जाने की वजह से सामने नहीं आ पाते थे। बलात्कार वैश्यावृत्ति से भी बड़ा या कहें मानवता का सबसे बड़ा जुर्म है।

इतनी व्यस्त सड़क पर पुलिस की नाक के नीचे यह वारदात होती रही। इस कांड की बर्बरता से और प्रशासन के लापरवाह रवैये से सारे देश में उबाल आ गया। कानून बनाने वाले और रखवाले के प्रति इतना आक्रोश कभी नहीं देखा गया। लाचार प्रशासन व सरकार ने कई वायदे किये।

इस पत्रिका के 'पृथम पृष्ठ' के माध्यम से हम उन सभी अबलाओं के प्रति अपनी सम्वेदना प्रकट करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि ऐसी घटनायें भविष्य में न हों।

औरत को शैतान की बेटी कहने वाले पुरुषों की बुद्ध को सन्मार्ग में प्रेरित करने का मंत्र अगले पृष्ठ पर दिया गया है।

-सम्पादक

''अपनी बेटी को बाहर निकलने से मना करने से कहीं बेहतर है कि हम अपने बेटों को संस्कार दें।''

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पेज नं०
१.	१६ दिसम्बर की काली रात	१
२.	अनुक्रमणिका	२
३.	ॐ	३
४.	संदेश - उपेन्द्र मिश्र	४
५.	संदेश - जस्टिस डी० के० त्रिवेदी	५
६.	संदेश - शैल नाथ चतुर्वेदी	६
७.	संदेश - जे० एस० मिश्र	७
८.	सम्पादकीय	९
९.	साइकिल छात्रवृत्ति प्रदाताओं के नाम	१०
१०.	आवरण कथा	११
११.	शहरनामा - अहमदाबाद गुजरात	१३
१२.	हिन्दी साहित्य में शक्ति काव्य परम्परा -प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित	१७
१३.	माननीय स्वर्गवासी न हुए -डा० एस.के. अवस्थी	२४
१४.	अदृश्य पिंजड़े - डा० डी.एस. शुक्ल	२५
१५.	भारतीय संवत्सर - जितेन्द्र कुमार अवस्थी	२६
१६.	दुलाईवाली : एक वङ्ग महिला	३३
१७.	राष्ट्र नायक - प्रमोद शंकर शुक्ल	४२
१८.	**Surrogate Mother** - श्रीमती नीरज शुक्ला "रानी"	४३
१९.	फूलन देबी बनाम घरवाली - शम्भु प्रसाद पांडे 'शम्भु'	४५
२०.	प्रज्ञा चक्षु - तिलक शुक्ल	४७
२१.	भारत के राष्ट्रपति के चुनाव -रमेश चन्द्र त्रिपाठी	५७
२२.	कान्यकुब्ज वाणी आभा मंडल	६०
२३.	कान्यकुब्ज कार्यकारिणी	६१
२४.	वीरकवि पं० कृष्ण शंकर शुक्ल 'कृष्ण' की अमरकृति 'बेनी माधव बावनी'	६३
२५.	गुरू कृपा -श्रीमती सुमन शुक्ला	६६
२६.	लैंडुडनो में लड्डू, सैक्रामेंटो में समोसा और ब्राजील में बड़ा-एम.सी.द्विवेदी	७१
२७.	सुख शान्ति और आनन्द	७३
२८.	छात्र-वृत्ति पाने वाली छात्रायें	७५
२९.	जातीय पत्रिकाओं की सार्थकता - शैल नाथ चतुर्वेदी	७६
३०.	गौरवमयी कान्यकुब्ज गरिमा महिमा -ब्रह्मानन्द दुबे	७९
३१.	श्रद्धान्जलि	८१
	- स्व० विनया त्रिपाठी	८२
	- स्व० यू०डी० शुक्ल	८३
३२.	मेम्बरशिप फार्म	८७

ॐ

ॐ भूभुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम
भर्गोदेवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोदयात।

(हम उस प्राण स्वरूप दुःख नाशक, सुख स्वरूप श्रेष्ठ एवं तेजस्वी, पापनाशक देव स्वरूप परमात्मा को हम अपनी अंर्तआत्मा में धारण करे और वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे ॐ)

तेज स्वरूप ब्रहम सत् रज तम् दुःखनिवारक शांति स्वरूप,
तेजस्वी ज्योतिर्मय सुन्दर दिव्य सत्य शिव जिनका रूप।
परमानन्द सूर्य की आभा पाप विनाशक ऊर्ध्वमुखी,
प्रज्ञा को कल्याणमयी कर मुझे बनायें पूर्ण सुखी।
भय चिन्तायें और दीनता रोम रोम आये न कहीं,
असत् वृत्तियाँ शून्य बनायें प्राण शत्ति हो तेजमयी।
सभी पूर्णता मुझमें आये दीन याचना हो न कहीं,
तुमको अन्तर्मन धारण कर रहे चेतना दिव्यमयी।

-इं. बसंत राम दीक्षित

Upendra Misra
Advocate

Res./Off.: 'SAKURA'
4/53, Vishal Khand
Gomti Nagar, Lucknow-226010
Tel. : 0522-2395394

संदेश

कान्यकुब्ज वाणी के चतुर्थ अंक का प्रकाशन पत्रिका की सम्पादकीय समिति का सराहनीय परिश्रम एवं अथक प्रयास है। यह पत्रिका कान्यकुब्ज समाज को जोड़ने के लिये अवश्य है परन्तु रोचक रचनाओं एवं अति उपयोगी लेखों के कारण मनोरंजक भी है।

सभा की वेबसाईट www.kanyakubj.org को ५३,००० से अधिक लोग क्लिक कर चुके हैं। आशा है कि वेबसाईट पर विवाह योग्य ब्राह्मण युवक एवं युवतियों के दिये गये विवरण का उपयोग भी अनेक लोगों ने किया है।

आप सभी का सहयोग हम लोगों के प्रयासों को दिशा एवं गति देकर कान्यकुब्ज वाणी को और रुचिकर एवं उपयोगी बनायेगा।

(उपेन्द्र मिश्र)

Justice D.K. Trivedi
(Retd.)

Tel.: 0522-2302591 (R)
6/169, Harikripa, Vineet Khand-6
Gomti Nagar, Lucknow-226 010

संदेश

जुड़ने एवं जोड़ने के उद्देश्य से प्रकाशित 'कान्यकुब्ज वाणी' पत्रिका अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा के प्रयासों को सार्थक करती है। समाज की कुरीतियों एवं रूढ़िवादिता को दूर कर, निर्धन एवं मेधावी छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति एवं साईकिल की आर्थिक सहायता द्वारा कान्यकुब्ज समाज को आगे बढ़ाने का जन संदेश देने के लिये यह पत्रिका एक शक्तिशाली माध्यम है।

कान्यकुब्ज समाज एवं रूचिकर उपयोगी लेखों से भरपूर इस पत्रिका की निरन्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनायें।

डी० के० त्रिवेदी

फोन : 0522–2683132

शैल नाथ चतुर्वेदी

आदित्य शैल
53, खुर्शेदबाग
लखनऊ–226004

प्रिय डा0 शुक्ल,

आपसे संक्षिप्त भेंट में ही मैंने समझ लिया था कि कान्यकुब्ज वाणी का भविष्य उज्ज्वल है। मेरा अनुभव है कि जिस कार्य को कोई प्रसन्नतापूर्वक कष्ट उठाने के लिये तैयार रहने वाला व्यक्ति उठा लेता है, वह अवश्य सिद्ध होता है। आप मेरे जैसे गैर कान्यकुब्ज के पास आये, पत्रिका की प्रतियाँ दीं और सहयोग की अपेक्षा की, यह मेरे कथन का आधार और प्रमाण है।

आपने मुझसे शुभकामना भेजने का आग्रह किया था। लिखने बैठा तो वह लेख बन गया। आप चाहें तो उपयोग कर लें।

शुभकामना के साथ,

भवदीय

शैल नाथ चतुर्वेदी

जे. एस. मिश्र आई.ए.एस. (से.नि.)

पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं आयुक्त
खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग,
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय,
भारत सरकार

14/09/2012

प्रिय डा0 शुक्ला जी,

कृपया अपने हस्तलिखित पत्र के साथ संलग्न कान्यकुब्ज वाणी पुस्तिका हेतु आभार स्वीकार करें। मेरे द्वारा इस पुस्तिका के स्थायी स्तम्भ की कई रचनाओं एवं विशेषकर ड्राईंगरूम वार्ता, रावणो उवाच एवं कविताओं का अध्ययन किया गया।

कृपया इन उपयोगी एवं रोचक रचनाओं को सम्मिलित करते हुए कान्यकुब्ज वाणी प्रकाशित करने हेतु बधाई स्वीकार करें। मुझे यह भी जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि यह संस्था बहुत पुरानी संस्था है एवं आप द्वारा इस संस्था को एक नई ऊर्जा एवं नया आयाम दिया जा रहा है।

कृपया अपने योगदान हेतु मेरी शुभकामनायें भी स्वीकार करें।

सादर

भवदीय
14.9.2012

(जे.एस. मिश्र)

डा0 डी.एस. शुक्ला,
पूर्व मुख्य चिकित्सा अधीक्षक,
18/378, इन्दिरा नगर,
लखनऊ।

आवास: बी-4/224, विशाल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ • मोबाइल : +91-8765699999 फोन : 0522-2396057 ईमेल: js_mishra@hotmail.com

With best compliments from :

Gammon India Limited

सम्पादकीय

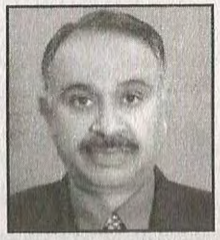

वर्ष की अति चर्चित घटनायें जैसे ईश्वर कण, राष्ट्रपति चुनाव, सरोगेसी से सम्बन्धित रचनायें अद्ययतन अंक में सम्मिलित की गई हैं।

वाणी का और इसके पाठकों का परम सौभाग्य है कि पत्रिकाओं में मानदंड के रूप में स्थापित ''सरस्वती'' पत्रिका, जिसने बहुत से मूर्धन्य साहित्यकारों को उत्प्रेरित किया और तराशा। ऐसी ऐतिहासिक धरोहर से अधुनातन पाठकों को परिचित कराने के लिये ''सरस्वती'' की एक कृति इस अंक में तथा आगे आने वाले सभी अंकों में प्रकाशित होगी।

हमारी मूल भाषा अवधी है जो धीरे-धीरे प्रचलन से बाहर हो गई। केवल कुछ लोग ही अपने अंतरंगो से बात करने में इसका प्रयोग करते होंगे। इस भाषा को भूल न जायें इस आशय से इस अंक से एक 'अवधी पन्ना' जोड़ा जा रहा है। अवधी में रचनाओं का स्वागत है।

वह रचनायें, पत्रिका अथवा ग्रंथ ''स्वयं स्फूर्त'' होते हैं जिनमें सम सामयिक विषय का समावेश होने के साथ ही साथ वह अपनी ऐतिहासिक धरोहर से भी आलोकित होती हैं। इस प्रयास में ''कान्यकुब्ज वाणी'' कितनी सफल हुई इसका निर्णय तो सुधी पाठक ही करेंगे। ऐसे महानुभावों को ''वाणी'' का यह चतुर्थ अंक समर्पित है

डा० डी० एस० शुक्ला
१८/३७८, इन्दिरा नगर
लखनऊ-२२६०१६
मो० ९४१५४६६५६१
ईमेल : dsumeshdp@rediffmail.com

साइकिल छात्रवृत्ति प्रदाताओं के नाम

कर्नल पी. के. त्रिवेदी	रु० ३००० मात्र
श्रीमती शैल मिश्रा	रु० ३००० मात्र
श्री गोविन्द शरण निगम	रु० ३००० मात्र
डा० आर० के० मिश्र	रु० ३००० मात्र देना है
डा० परेश शुक्ल	रु० २००० मात्र
श्री अखिलेश बाजपेयी	रु० २००० मात्र

श्रीमती मीनू द्विवेदी रु० ५००० मात्र रु० ३६०० मात्र एक छात्रा की साल भर की फीस बाकी १४०० मात्र साइकिल के कोष में जमा

कुल साइकिल छात्रवृत्ति	रु० १६४०० मात्र
विशेष छात्रवृत्ति	रु० ३६०० मात्र
कुल पूर्ण योग	रु० २३००० मात्र

साइकिल छात्रवृत्ति पाने वाली छात्रायें

१. अन्जू मिश्रा पु. अनिल मिश्र
२. लक्ष्मी शुक्ला पु. अरविन्द शुक्ल
३. क्षमा बाजपेयी पु. हेमू बाजपेयी पेट्रोल पम्प पर कार्य
४. ज्योतिष्मा त्रिवेदी पु. दिनेश त्रिवेदी
५. मोहिनी मिश्रा पु. स्व. रमाकांत मिश्रा रेउसा, सीतापुर
६. कु. मोनू पु. स्व. मोहन लाल रेउसा, सीतापुर
७. अजया मिश्रा पु. रमाकांत मिश्रा, रायबरेली, खोम्वा
८. दिव्या बाजपेयी

विशेष पुरस्कार साल भर की फीस रु० ३६०० मात्र

आवरण कथा

ईश्वर कण या 'हिग्स बोसान'

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक प्रकृति में केवल दो अवयव - 'शक्ति' (energy) और 'पदार्थ' (matter) माने जाते थे जिसमें पदार्थ अविनाशी और निरंतर माना जाता था। शक्ति पदार्थ से अलग मानी जाती थी। परंतु अल्बर्ट आइन्सटाइन की $e=mc^2$ समीकरण (जिसमें e= ऊर्जा, m=mass= द्रव्यमान, c= प्रकाश की गति) से सिद्ध हो गया कि पदार्थ भी शक्ति में बदला जा सकता है और इससे अपार शक्ति उत्पन्न होती है। इस समीकरण ने वैज्ञानिकों को विचार बिन्दु दिया कि यदि पदार्थ शक्ति में रूपान्तरित हो सकता तो शक्ति से पदार्थ भी उत्पन्न किया जा सकता है।

सृष्टि की रचना के सम्बन्ध में किये जा रहे शोध को भी आइन्सटीन के समीकरण से दिशा मिली। "Big bang" में बहुत सी ऊर्जा निकली और उसी से पदार्थ का भी निर्माण हुआ होगा। वैज्ञानिकों का यही अनुमान था। विज्ञान जगत में पहली बार इस जटिल प्रश्न को भारतीय वैज्ञानिक 'सत्येन्द्र नाथ बोस' ने गणित द्वारा समझाने की कोशिश की। तब भारत परतंत्र था। अंग्रेज़ विज्ञान जगत ने इसे नकार दिया। बोस ने अपना शोध पत्र अल्बर्ट आइन्सटाइन के पास जर्मनी भेजा। आइन्सटाइन ने इस शोध को जर्मन भाषा में अनुवाद करा कर पढ़ा और इसे 'बोस आइन्सटाइन थ्योरी' के नाम से विज्ञान जगत के शीर्षस्थ जर्नल में छपवाया। इस शोध को सर्वत्र स्वीकार किया गया। इस शोध के लिये श्री बोस को 'नोबेल पुरस्कार' मिल सकता था। बोस ने बताया कि बहुत बड़ी मात्रा में दो शक्ति पुंज के टकराने से एक कण उत्पन्न हो सकता है जिसमें 'द्रव्यमान' हो। आइन्सटाइन ने इस कण को इसके आविष्कारक सत्येन्द्र नाथ बोस के नाम पर 'बोसान' रखा।

इस खोज के बहुत दिनों बाद हिग्स नामक वैज्ञानिक ने इस कण का प्रतिपादन किया। यह कण इतना elusive था कि तमाम प्रयोगों के बाद भी इसे प्राप्त नहीं किया जा सका इसलिये हिग्स के एक सहयोगी ने झुंझलाहट में इसे 'God damn particle' कहा। यह शब्द बहुतों की भावनाओं को ठेस पहुंचा सकता था इसलिये इसका नाम 'God particle' (ईश्वर कण) रखा गया। पहले

से ही इसे बोस के नाम पर 'बोसान' कहा जाता था अतएव हिग्स का नाम जोड़ कर इसे 'Higg's Bosson' कहा गया।

अभी तक वैज्ञानिक १३ प्रकार के 'कण' ढूंढ चुके थे। वह सभी ज्योति कण या प्रकाश कण की भांति मात्र ऊर्जा कण थे। उनमें द्रव्यमान नहीं था।

वैज्ञानिकों ने बिग बैंग को बहुत ही सूक्ष्म रूप में प्रयोगशाला में सृजित किया। योरोप में भूमि के नीचे २७ किलोमीटर लम्बे कोलाइडर में 'प्रोट्रान्स' को लगभग प्रकाश की गति से आपस में टकराया। इससे प्राप्त तथ्यों (Data) के विश्लेषण से 'ईश्वर कण' या 'हिग्स बोसान' के उत्पत्ति के संकेत मिले। हालांकि वह कण दीर्घजीवी नहीं था, फिर भी इसके अस्तित्व की पुष्टि हो गई। सारा विश्व प्रसन्न था। अभी तक सत्येद्र नाथ बोस को भारत में ही कोई नहीं जानता था पर अब उन्हें सारा विश्व जान गया। यह भारत के लिए गौरव का विषय है।

इस 'कण भौतिकी' के प्रयोग जेनेवा के 'योरोपियन सेन्टर फार रिसर्च इन पार्टिकल फिज़िक्स' या सी ई आर एन में हो रही है। इसी C.E.R.N. के प्रांगण में सन् २००४ में 'महादेव शिव की तांडव मुद्रा' में 'नटराज' की दो मीटर की एक प्रतिमा स्थापित की गई है। 'नटराज' की यह नृत्य मुद्रा प्रकृति के संहार और सृजन के चक्र को प्रदर्शित करती है। यह नृत्य, परमाणु के अन्दर सूक्ष्म कणों की सतत गतिशीलता को इंगित करता है। यही गतिशीलता विश्व सृजन का आधार है। यही शोध **C.E.R.N.** की प्रयोगशाला में चल रहा है।

-सम्पादक

विशेष आभार

- 'वाणी पुत्र' का उमा दत्त शुक्ल ने इस वार्षिक आयोजन के लिये रु. ३००० मात्र का सभागार का शुल्क प्रदान किया।
- वैभव शुक्ल ने अपने पितामह स्व. यू. डी. शुक्ल की स्मृति में रु. २००० मात्र प्रदान किया।
- डा. पी.पी. त्रिपाठी, बलरामपुर, उ.प्र. ने अपनी पत्नी स्व. विनया त्रिपाठी की स्मृति में रु. १५०० मात्र प्रदान किया।
- श्रीमती मीनू द्विवेदी ने अपने पति स्व. रत्नेश कुमार द्विवेदी की स्मृति में एक छात्रा के साल भर की फीस रु. ३६०० मात्र प्रदान किया।
- श्रीमती नीरज शुक्ला ने सभा की तरफ से वृद्धाश्रम को एक **Exercise Bicycle** प्रदान की।

सभा इन सदस्यों को हार्दिक आभार ज्ञापन करती है।

शहरनामा

अहमदाबाद गुजरात

दीपाली
गुजरात, अहमदाबाद

लखनऊ और दिल्ली की भांति अहमदाबाद के भी दो चेहरे हैं। एक पुराना अहमदाबाद जो हर तरह से पुराने लखनऊ की कापी लगता है। नया अहमदाबाद एक सुन्दर व्यवस्थित और अनुशासित शहर है। वर्तमान में गांधीनगर के नाम से एक बिल्कुल नया शहर बनाया गया है जो एकदम माडर्न है खैर आज हम केवल अहमदाबाद का ही ज़िक्र करेंगे।

पुराना अहमदाबाद स्टेशन के बाहर यदि आप देखें कि आटोचालक चौराहे पर बगैर सिग्नल का इन्तज़ार किये बिना चलता जाता है। निकलने भर की जगह हो या न हो निकलने का प्रयास करता हुआ बगैर मुड़ने के लिये सिगनल या हाथ से इशारा न करके केवल पैर निकाल कर ही गंतव्य बताये रात में बगैर हेड या टेल लाइट के अन्धाधुन्ध आटो भगाता मिले चौराहे पर सिग्नल न होते हुए भी घुस जाये और ट्रैफिक जाम का कारण बन जाये तो आप समझ लें कि आप पुराने अहमदाबाद में ही हैं। अगर वह किसी गाड़ी को हल्के से ठोक भी देता है तो शान्त स्वभाव गुज्जू भाई केवल गर्दन टेढ़ी कर जतायेंगे... क्या भाई। जब कि यू पी और दिल्ली में इतने में सिर फूट जायेंगे।

पर पुराने अहमदाबाद में कुछ बहुत सुंदर चीज़ें भी हैं

काकरिया काकरिया पिकनिक स्पाट अहमदाबाद का सबसे अहम स्थान है। भयानक भीड़ पार कर जब आप यहां पहुंचेगे तो सारा तनाव मिट जायेगा। एक किलोमीटर व्यास की झील में नौकायन, ट्वाय, ट्रेन, खाने पीने का बढ़िया प्रबन्ध, सुन्दर प्रकाश व्यवस्था आपको मोह लेगी। ट्वाय ट्रेन के रास्ते में एक जगह बदबूदार जगह आयेगी और आपको बतायेगी कि आप चिड़ियाघर के पास से गुज़र रहे हैं। विश्वास ही नहीं होता कि इतने भीड़ के इलाके में चिड़िया घर भी हो सकता है और इतना सुरम्य वातावरण भी हो सकता है।

चेतावनी अहमदाबाद में वर्षा नहीं के बराबर होती थी। पिछले साल से इन्द्र देव की कृपा से बारिश अच्छी हो रही है और जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यहाँ रेनकोट या छाते का चलन भी नहीं है। भीग कर ही घर जाने का फैशन है। अगर आप विस्तार जाने का प्रोग्राम बनाते हैं तो कुछ दूर अगर आपको तैर कर जाना पड़े तो गलती आपकी ही है क्योंकि आपने गलत समय चुना। इसी तरह आप गर्मी का मौसम चुनते हैं तो भी गलती करेंगे। दिन बेहद गर्म कि आप परेशान हो जायें। पर शामें इतनी हसीन हवादार कि ज़िन्दगी का मज़ा आ जाये। दिन भर की गर्मी और शिकायत गायब। काश गर्मियों में यहां केवल शामें और रातें ही हों। यहां रात देर से शुरू होती है। हर चौराहे पर ६ या ७ रुपये में बियर बाटल भर मिलने वाली छाछ दिल खुश कर देती है।

खानपान यहाँ छुट्टी या रज़ा के दिन आमतौर पर बाहर खाने का रिवाज़ है। आपको हर छोटे बड़े होटल में एक लम्बी कतार मिलेगी और खाने के लिये अपनी पारी बुक करानी पड़ेगी। वहाँ खड़े स्टाफ को अपना नाम तथा सदस्यों की संख्या नोट करानी पड़ेगी। तब कहीं आधे या एक घन्टे के बाद आपका नम्बर आ पायेगा। वैसे खाने पीने का सामान लगभग हर चौराहे पर खड़ी लारी वैन में भी खूब मिलेगा। अहमदाबाद में आपको जैन आमलेट, जैन पिज्जा, जैन हैमबर्गर मिलने पर आप चकित मत होना। यहां जैन समुदाय के बहुत लोग रहते हैं और उनका सभी होटल वाले ध्यान रखते हैं।

अहमदाबाद ही नहीं पूरे प्रदेश की एक बात भारत में सबसे निराली है "शराब यहाँ पूरी तरह से प्रतिबन्धित है"। यदि आप गलती से शराब पी कर टहलते या ड्राइव करते पकड़े गये तो पुलिस वाले जम कर पिटाई तो करते ही हैं साथ ही साथ जेब के सारे पैसे भी ढीले करने पड़ सकते हैं। आनलुकर्स भी कोई सहानुभूति प्रदर्शित नहीं करते। मीट और मांस भी आपको कहीं दिखाई नहीं देगा। बुजुर्गों का कहना है कि तामसी और राक्षसी प्रवृत्ति की उपज शराब और मांस से ही होती है। इसलिये यहां अपराध बहुत कम है। यहां आप बगैर सोचे समझे रात को एक या दो बजे तक कार, बाइक या पैदल पूरी फैमिली के साथ टहल सकते हैं। सड़क के किनारे लगी बेन्चों पर आराम से बैठ सकते हैं। आपको यह भी बताना चाहूंगी कि फुटपाथ की चाय का अपना अलग फ्लेवर होता है। पहले माहौल देख कर शायद आपको चाय पीने का मन न हो पर एक

बार टेस्ट करने के बाद आप चाय कहीं और नहीं पियेंगे। हमेशा अद्धी चाय का ही आर्डर दें जो प्याले के कन्धे तक भरी रहती है। अक्खी चाय प्याले से बह कर प्लेट भर दी जाती है। यदि आप किसी स्थानीय के मेहमान हैं तो वह अक्खी चाय लेकर कप से खुद और आपको प्लेट में चाय आफर करेगा। यह उनके स्नेह प्रदर्शित करने का तरीका है।

विद्यार्थी हर जगह की तरह यहां के भी विद्यार्थियों में साल भर पढ़ने का चलन नहीं है। अब चूंकि यारों दोस्तों से मिलने खाने पीने और ड्राइव का आनन्द यदि लेना है तो कालेज तो जाना ही होगा। वह घर से निकलते समय बैक पाकेट में एक पतली नोट बुक फोल्ड करके रख लेते हैं कि शायद कहीं काम आ जाये। पढ़े लिखे लोगों में से ५० प्रतिशत लोगों में पेन खरीदने का रिवाज़ नहीं है। इसलिये हर तीसरा आदमी ज़रूरत पड़ने पर पेन मांगता हुआ दिखेगा। स्टूडेन्ट केवल साल में एक बार इम्तिहा के समय पेन खरीदता है। इम्तिहा के दौरान पिता या भाई के साथ बाइक पर नोट्स का जुगाड़ करने निकलता है और नोट्स पाने के बाद ही उसको पता चलता है कि सिलेबस क्या है और आज इम्तिहान किस सब्जेक्ट का है।

युटिलिटी सेवा थ्री इडीयट फिल्म का प्रसिद्ध डायलाग "हिन्दुस्तान में आधे घंटे में पिज्जा आ जाता है पर एम्बुलेन्स तीन घन्टे में भी नहीं आती"। अहमदाबाद में चाहे पिज्जा देर से पहुंचे पर १०८ पर फोन करने पर एम्बुलेन्स १० से १५ मिनट में अवश्य पहुंच जाती है। यहां रेड लाइट बस सेवा गरीबों के लिए आफिस टाइम में मुफ्त है।

यह कृष्ण और कुरियन (मिल्कमैन आफ इन्डिया) की कर्मस्थली रही है इसलिये यहाँ का अमूल दूध गुजरात के अलावा पूरे राष्ट्र की ज़रूरत का एक बड़ा हिस्से की आपूर्ति करता है। गोवंश पर यहां के लोगों की बड़ी श्रद्धा है। आफिस जाते समय ज्यादातर "अहमदाबादी" मुट्ठी पर घास १० रु० में लेकर गऊमाता को अवश्य खिलाते हैं। अहमदाबाद आने पर लगभग ३५० किमी दूर द्वारिकाधीश बेट द्वारिका नागेश्वर और सोमनाथ का दर्शन किये बगैर शायद ही कोई वापस आता हो। इसके अलावा रूफटाप बस रेस्ट्रां, साबरमती नदी पर रूफटाप बोट रेस्ट्राँ, ला गार्डेन की फुटपाथ मार्केट जहाँ पारम्परिक गुजराती ड्रेस जिसमें कच्छ की कढ़ाई गरबा की पारम्परिक ड्रेस तथा महिलाओं को लुभाने वाली अन्य वस्तुयें मिलती हैं जिसमें कि जम कर बारगेनिंग भी होती है। अम्बादेवी शक्ति पीठ के पास

ही पहाड़ी पर स्थित चुनरी वाली माता भी काफी प्रसिद्ध हैं। किंवदंती है कि गत ६५ वर्षों से कुछ खाया पिया नहीं अपोलो एवं स्टर्लिंग अस्पताल में क्लोज़ सर्किट टी वी में आबज़र्वेशन में रख कर इनकी सत्यता भी जांची जा चुकी है। अनोखी बात तो यह है कि यह माता जी पुरुष हैं जोकि स्त्री रूप में रहती हैं।

त्योहार अहमदाबाद के लोग बहुत ही उत्सव प्रिय हैं। सभी उत्सव खुलकर मनाते हैं और खुलकर खर्च भी करते हैं। चौमासा खत्म होते न होते त्योहारों का सिलसिला जो शुरू होता है वह होली पर ही जाकर खत्म होता है। दीपावली और मकर संक्रान्ति जब सूर्य देव उत्तरायण होते हैं तो अहमदाबाद क्या गुजरात के हर शहर में आप इनकी रौनक देख सकते हैं जिन्हें शब्दों से बयां नहीं किया जा सकता। मकर संक्रान्ति पर रंग बिरंगी पतंगों का इन्द्र धनुष सा पूरे आकाश पर छा जाता है। घर की छत पर रोज़ाना १०० या पचास कटी पतंगों का गिरना साधारण बात है। बच्चे बूढ़े स्त्री पुरुष सभी छतों पर मौजूद रहते हैं। यहां का एक और अलबेला अंदाज़ है। लड़कियाँ धूप के चश्में लगा कर पतंग उड़ाती दिखेंगी और लड़के छुड़इया देते और चर्खी पकड़े दिखाई देंगे। खाना पीना संगीत और शोर शराबे के बीच संक्रान्ति का पर्व एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में जिया जाता है। अहमदाबाद से ही पतंग बाज़ी को अन्तर्राष्ट्रीय दर्जा मिला हुआ है।

गरबा उत्सव यह पर्व गुजरात की जान है। शारदीय नवरात्रि में यह पर्व मनाया जाता है। अबाल वृद्ध स्त्री पुरुष सभी पर एक नशा छा जाता है। इसको बयां नहीं किया जा सकता देखने पर ही यकीन आयेगा। हर मोहल्ले सोसाइटी पार्क होटल में गरबा का आयोजन होता है। एक बात जो मेरे दिल को विशेष रूप से छू गई। गरीब बच्चे और युवा जो गरबा का आयोजन एफोर्ड नहीं कर सकते शासन उनके लिये फुटपाथ पर ही लाइट और म्यूज़िक सिस्टम लगवा देता है गरीब भी आनन्द से वंचित नहीं रहते।

महिलाओं का स्थान जैसा कि आजकल सीरियल्स में दिखाया जाता है गुजराती परिवार की मुखिया महिला ही होती। फर्राटे से बाइक चलाती लड़कियाँ एक आम दृश्य है। हाँ बैक सीट पर बैठा लड़का एक ही तरफ दोनों पैर कर "आंटी जी" स्टाइल में बैठते हैं। युवा महिलायें आधी रात में सारे गहने पहन कर घूम सकती हैं।

मेरे पति का कहना है कि यदि मेरी बेटी हो तो उसका विवाह गुजरात में हो। और यदि मैं अगले जन्म में स्त्री रूप में जन्म लूं तो वह केवल गुजरात में।

हिन्दी साहित्य में शक्ति काव्य परम्परा

भारतीय साहित्य में शक्ति की अवधारणा का विकास एक दीर्घकालिक चिन्तन यात्रा में हुआ है। साहित्यकारों ने शक्ति के दर्जनों अर्थ निकाले हैं - जैसेः-

१. शक्ति काव्य शास्त्र का एक परिभाषिक शब्द है, तात्पर्य है काव्य रचना की ईश्वर प्रदत्त नैसर्गिक प्रतिभा अथवा उद्भावना एवं कल्पना शक्ति।

२. कामशास्त्र में शक्ति है रति सम्मोहन मैथुनी शक्ति और स्तम्भन की क्षमता।

३. इसे सृष्टि का तथा कलात्मक सृजन का मूल हेतु कहा गया है।

४. शक्ति का एक रूप है ऋद्धि सिद्धि, सम्पति अर्थात महालक्ष्मी की भौतिक माया।

५. कवियों ने शक्ति रूप में मातृत्व (जननी) की बड़ी स्तुति की है। मातृत्व उत्पादकता का प्रतीक है। इस कृषि प्रधान देश में जनशक्ति की बड़ी आवश्यकता थी इसलिये यहाँ प्रजनन को बड़ा महत्व दिया गया है। गांधारी के मिथ के अनुसार से पुत्रों को जन्म देने वाली जननी में देवीत्व का संचार हो जाता है। ऐसी हमारे लोक जीवन की फलों का शुभाशीष प्रतिफलित होता है।

६. शक्ति का एक रूप है भगवती पार्वती (गौरा भवानी) जो भोले भंडारी की ही नहीं सम्पूर्ण लोक की अन्नपूर्णा हैं।

७. शक्ति की उपासना भारतीय समाज में भयोपासना से भी प्रेरित रही है। प्राचीन काल में यहां बाल मृत्यु दर बहुत ज्यादा थी। हैजा प्लेग चेचक जैसे संक्रामक रोग बहुत होते थे। उनसे नौनिहालों की रक्षा करने के लिये कई देवी शक्तियों की प्रतिष्ठा की। आज भी यह दैवी उपचार बहुत प्रचलित हैं।

८. कुछ क्षेत्रों में शक्ति का प्रयोग अपशक्ति के रूप में अर्थात प्रेत पूजा के रूप में प्रचलित है।

९. शक्ति का एक उपयोग अभिचार के क्षेत्र में किया जाता है, जैसे शमशान साधना तंत्र मंत्र यंत्र विभिन्न टोने टोटके।

१०. सामान्यतः शक्ति मांगल्य की प्रतीक हैं। भारतीय जनजीवन के प्रत्येक शुभ अवसर पर इसीलिये भगवती का आवाहन किया जाता है। अवध क्षेत्र में विवाह उपनयन जैसे संस्कारों के पूर्व "सन्ध्या गोसाइन" को आमन्त्रित किया जाता है। जिससे कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो।

११. हिन्दी साहित्यकारों ने शक्ति का एक अर्थ जनता की शक्ति से निकाला है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान इन्होंने जन शक्ति की बड़ी चर्चा की है।

१२. शक्ति का अर्थ राज सत्ता या व्यवस्था से भी निकाला गया है। यहाँ "स्टेट" प्रतिष्ठान "पावर" का पर्याय है।

१३. हिन्दी के राष्ट्र भक्त कवियों ने शक्ति को "भारत माता" के रूप में चित्रित किया है। हिमांचल उनका शिखर है गंगा यमुना का मैदान उनका कलेवर है सह्यादि की चट्टानें उनके चरण हैं। लंका चरणों पर पडा पुष्प है। बृहत्तर भारत का यह बिम्ब "भारत माता" के रूप में बहुत प्रचलित है।

१४. वर्तमान साहित्य में शक्ति का अर्थ है "स्त्री सशक्तीकरण"। इस प्रकार शाक्त सम्प्रदाय की शक्ति हिन्दी कविता में महाशक्ति का रूप धारण कर अर्थात महासरस्वती महालक्ष्मी और नव दुर्गा रूप में अनेक हिन्दी कवियों की आलम्बन बनी हैं। उनके काव्य सृजन हेतु यह दो युग्म बहुत प्रयोजनीय रहे हैं -

१. सरस्वती और गणेश - जिसमें सरस्वती जी विद्या और बुद्ध की देवी हैं और गणेश जी लिपिकार हैं।

२. लक्ष्मी और गणेश - जिसमें लक्ष्मी जी धन की देवी हैं और गणेश जी विघ्न विनाशक हैं।

हिन्दी जगत में पंच देवोपासना की जो परम्परा विकसित हुई उसमें एक और अर्धनारीश्वर की कल्पना जागी और दूसरी ओर मानवीय शक्ति त्रिकोण की स्थापना हुई। हिन्दी कवियों ने सीता राम युग्म में सीता को सतीत्व का आदर्श माना। राधा कृष्ण के रूप में राधा को परम आह्लादिका और सम्मोहिनी श्री शक्ति

कहा। उमा शंकर के युग्म में गौरा को लोक कल्याण की देवी माना। सूर्य गायत्री के युग्म में गायत्री को सर्व कल्याणकारी सिद्ध किया और गणेश लक्ष्मी के युग्म में विष्णुप्रिया लक्ष्मी की पूजा की। समुद्र की कन्या लक्ष्मी जी वरुण एवं यक्ष संस्कृति की प्रतीक भी हैं और देवों की अधिष्ठात्री भी। सीता राधा सब उनकी अवतार हैं। शक्ति का त्रिकोण बनाते हुए कश्मीरी शैवागम के प्रभाव वश महाकवि प्रसाद ने इच्छा किया और ज्ञान की प्रतिष्ठा की और इनके समन्वय द्वारा आनन्द वाद की स्थापना की। तात्पर्य यह है कि हिन्दी रचनाकार केवल शक्ति पीठों तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि उन्होंने जीवन जगत की प्रत्येक गतिविधि तक शक्ति संकल्पना का विकास किया।

भारतीय साहित्यकारों में शक्ति की आरम्भिक आराधना शंकराचार्य जी ने की। उन्होंने "सौन्दर्य लहरी" में परा अपरा (क्षेत्रज्ञ) और अविद्या उन तीनों शक्तियों की प्रशस्ति की साथ ही साथ शिव शक्ति का भेदाभेद निरूपण किया। महाकवि कालिदास ने शक्ति का विशेष कृपा प्रसाद प्राप्त किया। उन्हें गढ़ कालिका का इष्ट प्राप्त था। उन्होंने पार्वती और परमेश्वर को वाक् और अर्थ की तरह परस्पर संपृक्त मानकर उनकी वंदना की। इसी प्रतीक को सीता जी पर घटित करते हुए तुलसीदास ने उन्हें 'उद्भव पालन संहार कारिणी क्लेश हारिणी' घोषित किया। पार्वती जी के लिये उन्होंने लिखा -

'जगदम्बा तब सुता भवानी। जग सम्भव पालन लयकारिन

निज इच्छा लीला वपु धारिनि'

इसी से मिलता जुलता उनके कुछ कथन सीता जी के प्रति हैं -

जासु अंश उपजहि गुन खानी। भृकुटि विलास जासु लय होई।।

गोस्वामी जी ने सीता राम के युग्म को 'गिरा अर्व जल बीच सम' अभिन्न माना है। यह कालिदास की उपमा का ही विस्तार है।

हिन्दी कविता अपने जन्म काल से ही शक्ति सिद्धान्त में केन्द्रित दिखाई देती है। ७वीं सदी के प्रसिद्ध सिद्ध कवि और हिन्दी के आदि कवि सरहपा ने अनेक छन्दों में कौल कापालिक की वज्रयानी तान्त्रिक साधना का उल्लेख करते हुए "कमल कुलिश बधि मज्जहू" कह कर डोम्बिनी देवी की आराधना की है। नाथ कवियों में

मत्स्येन्द्र नाथ गोरख नाथ ने 'सुरति निरति' के रूप में इस शक्ति की साधना की गई है। हिन्दी चारण कवि जैसे चन्द्रबरदाई चामुन्डा के उपासक रहे हैं। कृष्ण काव्य धारा के वरेण्य कवि विद्यापति ने देवी दुर्गा में महिषासुरमर्दिनी भवानी श्री राधा और गंगा की बारम्बार स्तुति की है। देवी के कई रूपों का उन्होंने चित्रण किया है। जैसे -

काजल रूप तुअ काली कहिये उजल रूप तुअ बानी।

रवि मंडल पर चंडा कहिये गंगा कहिये पानी।

ब्रह्मा पर ब्रह्माणी कहिये हर पर कहिये गौरी।

निश्चय ही विद्यापति शक्ति के निष्ठावान साधक थे।

कबीर आदि कुछ संत कवियों की स्थिति कुछ अलग दिखाई देती है। वे माया को ठगिनी मानते हैं और स्त्री शक्ति को सर्वथा त्याज्य। उनका मत था कि

'वैष्णव की छपरी भली नहिं साकत कर गाँव'

चूंकि इन दिनों वामाचारी पाखंडी साधक बलि के नाम पर पंच माकार का नारा देते हुए बहुत हिंसा कर रहे थे, इसलिये वह संत कबीर को रास नहीं आये।

जायसी प्रकट रूप से शक्ति पूजक नहीं थे पर 'जिक्र के समर्थक हैं। इसमें जप ध्यान और योग का विधान किया गया है। जायसी ने नायिका पद्मावती को नूर खुदा के स्तर पर पहुंचा दिया है। 'कान्हावत' में उन्होंने राधा कृष्ण को आधि दैवत् स्तर पर स्थापित किया है। इसी का परिष्कृत रूप अष्टछ्पी कृष्ण काव्य परम्परा में दिखाई देता है। पुष्टि मार्ग बल्लभ संप्रदाय राधाबल्लभ संप्रदाय आदि के अनुसार राधा कृष्ण परिस्पर अभेद्य हैं।

सूर लिखते हैं।

''राधा हरि आधा आधा तन एकै ह्वै ब्रज में अवतारि''

उनकी राधा तीनों लोकों की ठकुरानी हैं किशोरी जी हैं लाडली हैं। वे प्रेम योगिनी हैं। सारा वृन्दावन राधे राधे से अनुगुंजित है। कविवर देव ने ठीक ही लिखा है।

''मोहि मोहि मोहन को मन भई राधिका मय। राधा मन मोहि मोहि मोहन मयी भयी''

इस प्रेम भक्ति का प्रसार 'कृष्ण कल्ट' के रूप में इन दिनों देश देशान्तर में काफी परिव्याप्त है।

उत्तर मध्यकाल में कवियों ने शक्ति की उपासना का प्रगाढ़ परिचय दिया है। गुरू गोविंद सिंह देव ने 'चंडी चरित्र' नामक ब्रज भाषा में काव्य रचना की। इनसे प्रेरित होकर हिन्दी कवियों ने दर्जनों 'चंडी चरित्र' लिखे। दुर्गा सप्तशती के पद्यानुवादों की संख्या आज शतेताधिक है।

आधुनिक युग में शक्ति की समाराधना सर्वाधिक भारतेन्दु जी ने की है। वह राधा बल्लभ संप्रदाय में दीक्षा प्राप्त थे। उन्होंने दास्य सखा माधुर्य आदि विविध भावों से आपूरित होकर वृषभानु नन्दिनी की वन्दना की है।

मैथिली शरण गुप्त ने एक ओर तो 'दुर्गा सप्तशती' का सहारा लेते हुए ''शक्ति'' नामक काव्य की रचना की और दूसरी ओर 'साकेत' 'पंचवटी' 'द्वापर' आदि काव्यों में सीता राधा तत्व की गूढ़ विवेचना की। इसी बीच आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत 'देवी स्तुति शतक' और देवी दत्त शुक्ल रचित 'चंडी' का प्रकाशन हुआ।

इन सब में अपेक्षाकृत विशिष्ट रचना है ''कामायनी'। प्रसाद ने कश्मीरी शैवागम के सहारे सृष्टि की विकास कथा प्रस्तुत करते हुए और चिरन्तन आनन्द के स्रोत की खोज करते हुए श्रद्धा तत्त्व की प्रतिष्ठा की जो साक्षात महाचिति है। वह जीवन की इच्छा त्रिया ज्ञान तीनों शक्तियों का समन्वय करती है और अन्ततः सबका मंगल करती है। प्रसाद ने त्रिपुर रहस्य का उद्घाटन करते हुए लिखा है -

चिर मिलित प्रकृति से पुलकित वह चेतन पुरुष पुरातन।
निज शक्ति तरंगायित था आनन्द अम्बु निधि शोभन।

इसी युग में और भी कई काव्य कृतियां प्रकाश में आईं। जैसे वीरपाल सिंह की 'दुर्गा विजय' राम प्रसाद सर्राफ कृत 'हर हर महादेव' नन्दन जी का 'पार्वती' महाकाव्य कन्हैया लाल पोद्दार का महाकाव्य 'महाभातीया' चन्द्र प्रकाश सिंह रचित 'विजया' विश्वनाथ पाठक का 'सर्व मंगला' अनूप शर्मा रचित 'सर्वागी' महाकाव्य और निराला रचित 'राम की शक्ति पूजा' तुलसीदास आदि काव्य। सर्वमंगला अवधी भाषा का काव्य है उसमें महिषासुर वध की कथा कही गई है। सर्वागी में शर्मा जी ने उदात्त भाव भाषा का प्रमाण दिया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है -

अम्ब तू अनन्त शक्ति दुर्गा नाशिनी है चंडि सर्व मंगला है विभवा है विश्वकारिणी। रक्तबीज हासिनी है चंड मुण्ड नाशिनी है विंध्यगिरि वासिनी है संसृति प्रसारिणी।

धूम्र मर्दिनी है योधनावृत कर्णिनी है अग ओघ निवारिणी है जगतारिणी है शक्ति धारिणी है भक्ति विपिन विहारिणी।

निराला जी की 'राम की शक्ति पूजा' रामकृष्ण आश्रम (दक्खिनेश्वर मंदिर बेलूर मठ कलकत्ता) और काली की उपासना से प्रेरित है। उन्होंने विधिवत गैरिक वस्त्र धारण करके भगवान रामकृष्ण परमहंस के सानिध्य में रहकर स्वामी विवेकानन्द को भरसक आत्मसात किया था और स्वामी शारदानन्द जी, माधवानन्द जी जैसे गुरुओं से प्राप्त की थी। उनकी यह शक्ति संकल्पना अद्वैतवाद तथा अभिनव वेदान्त से प्रेरित है। शक्ति पूजा में उन्होंने शक्ति के तीन रूप अंकित किये हैं -

भयावह भीमा मूर्ति जो रावण को अपने अंक में धारण किये हुए हैं और चतुर्दिक अभेद्य कवच बनाये हुए हैं। कवि के शब्दों में -

''आच्छादित किये हुए सम्मुख समग्र नभ को''

दूसरा बिम्ब है महाशक्ति का जो दश दिशा रूपी दस भुजाओं में विभिन्न अस्त्र लिये हैं जिनके चरणों तले सिंह इव सागर गरज रहा है। पर्वत प्रदेश के मकरन्द से उनके कलेवर का गठन हुआ है। श्रीराम ने इनकी मानसी रचना करके शक्ति अर्जित की है। शक्ति का तीसरा रूप चित्रित हुआ है कविता के अन्त में जब भुवन मोहिनी महाशक्ति साक्षात श्रीराम के समक्ष प्रकट हो जाती हैं। उनके बायें भाग में चतुर्भुजा महासरस्वती हैं दाहिनी ओर महालक्ष्मी हैं। उनका बायां पैर महिषासुर के ऊपर है और दायां पैर सिंह पर। उनके दाहिने गणेश विराजमान हैं और बायें कार्तिकेय हैं और मस्तक पर शंकर हैं। कवि के अनुसार यह सारा ब्रह्मांड शक्ति का खेल सागर है। यह शक्ति कभी अंजना का रूप धारण करती है और कभी कुमारी सीता के रूप प्रस्तुत होती है। राम जब शक्ति के पक्षपात से दुःखी और हताश हो जाते हैं तो वह जनक वाटिका में पहली बार दिखने वाली कुमारी सीता के पूर्वराग वाली छवि का स्मरण करते हैं। इससे उनके हताश मन में शक्ति का नया संचार होता है। वे विश्व दिग्विजय की भावना से भर जाते हैं। निराला के राम ने दो दो प्रतिरोधी शक्तियों का आह्वान किया है। एक ओर गौरी कन्या सीता की शक्ति दूसरी ओर रावण द्वारा आहूत शक्ति। एक ओर कमल चुराने वाली मायावी शक्ति दूसरी ओर मां कौशल्या की शक्ति। एक ओर हनुमान दूसरी ओर

अंजना। शक्ति का एक नया बिम्ब निराला ने तुलसीदास नामक अपने खण्ड काव्य में रखा है। तुलसीदास का मन जब ऊर्ध्व संचरण करता हुआ जब आकाश में जब ऊपरी स्तर पर पहुंचता है तो वहां उन्हें नील वसना शारदा जी दिखाई देती हैं। वह दस भुजा देवी सहसा रत्नावली के रूप में परिणित हो जाती हैं जिससे कवि को भौतिक स्तर पर उतरना पड़ता है। अपनी अन्य कई कविताओं की कई आकृतियां बनाई हैं। देवी सरस्वती नामक कविता में बैसवारे की प्रति (मुख्यतः रबी की फसल) को सरस्वती की स्वर्ण प्रतिमा के रूप में अंकित किया गया है। जोते हुए खेत और लहलहाती हुई फसलें-ऐसा लगता है जैसे वीणा की ध्वनि तरंगे आ रही हैं। यह सरस्वती जी का लौकिक रूप है। कुछ कविताओं में उन्होंने देवी को भारत जननी के रूप में चित्रित किया है। एक कविता में माँ काली (श्यामा) से प्रलय नृत्य करने की प्रार्थना की है। स्वामी विवेकानन्द की कविता ''नाचे ताहुकि श्यामा'' का आश्रय लेते हुए ''एक बार बस और नाच तू श्यामा'' जैसे गति की उन्होंने रचना की है और उन्हें प्रलयंकारी रूप में स्थापित किया है। निराला की शक्ति वही चतुर्भुजा हैं, अष्टभुजा हैं ज्योतिष्मती हैं गौरी कुमारिका हैं पृथ्वी तनया हैं पराम्बा हैं रसिकोपासना के अन्तर्गत हनुमान रूप में वह चारु सखी शीला हैं काली के रूप में वह ''श्यामा महिमा विभावरी अन्धकार'' हैं। तात्पर्य यह है कि बड़ी विराट परिकल्पना है निराला जी की।

शक्ति की व्याप्ति लोक जीवन में बहुत है। यहाँ शीतला भुइंया देवी केला गंगा जमुना संझा तारिणी कंकाली पशवारी जालपा संतोषी वैष्णवी गुसाइन अहोई माता गो माता नाग माता संकठा हरछठ नवरात्र छठ माता आदि नाना रूपों में शक्ति का विस्तार है। इनसे सम्बन्धित न जाने कितने स्तोत्र लोकगीत देवीजागरण गीत कीर्तन भजन लोक कथायें व्रत कथायें लोक नाट्य अर्थात लोक वाङ्मय उत्तर भारत में छाया हुआ है। इससे सिद्ध है कि हिन्दी काव्यशक्ति मात्र पौराणिक परिकल्पना या पुरातात्विक संरचना तक ही सीमित नहीं है। हिन्दी कवियों ने शक्ति सिद्धान्त को योग वैष्णवमत शैवमत अर्थात समस्त लोकमत और शास्त्रमत को परस्पर जोड़ कर इस महाभाव की प्रतिष्ठा की है। इसी के कारण हिन्दी काव्य इतना शक्तिमान बन सका है।

प्रोफेसर सूर्यप्रसाद दीक्षित
अव० प्रा० विभागाध्यक्ष एवं डीन
लखनऊ विश्वविद्यालय

माननीय स्वर्गवासी न हुए

डा० एस० के० अवस्थी
निदा सीएमओ

माननीय मर तो गये। आत्मा अधर में लटक गई। त्रिशंकु की तरह। स्वर्ग का प्रवेशद्वार खुला था। वे देहरी पर थे। उन्हें द्वारपालों ने रोका। सुरक्षा कर्मियों ने टोका। पास मांगने पर उन्होंने कहा "कोई बात नहीं। धर्मराज से बात कराइये। आने तो दीजिए। इस तरह मत रोकिए – "हमरा भी अस्तित्व है। ऐसे किसी ने नहीं किया। हम भी कुछ हैसियत रखता हूँ। हम भी शासन किये हैं।"

जमदूतों ने अधिनियम का हवाला दिया। नयी व्यवस्था का जिक्र किया। प्रार्थना की। प्लीज़ सर! आप एक दिन स्वर्ग और एक दिन नर्क में रहकर देख लीजिए। चुनाव कर लीजिए। आपका निर्णय अन्तिम होगा। माननीय बोले "हम तो पहिले सोच कर आये हैं। स्वर्ग में रहेंगे।" जमदूतों ने क्षमा मांगी "आपको चुनाव की प्रक्रिया से तो गुजरना ही होगा।"

वे नर्क के द्वार पर ले जाए गए। उनका अद्भुत स्वागत हुआ। माला पहनाई गई। उनके सभी मित्र वहां थे। सेठ-सामंत, माफिया-मंत्री, प्रशासक-अधिकारी, ठेकेदार-देह के व्यापारी, माननीय-सर्वज्ञ सभी। शराब थी। शबाब था। वह सब कुछ था जिसकी उन्हें आदत थी। स्वर्ग में उन्हें अजीबो-गरीब सन्नाटा मिला। मरघटी शांति दिखी। महान आत्माएं ध्यान में लीन। उमड़ते-घुमड़ते बादल। शून्य, अनंत आकाश और कुछ नहीं। बस खाली वे, बिना परछाई के। यह टीम-टाम उन्हें पसन्द नहीं आया। यहाँ न तो अपनापन। न अपने। उन्होंने चुनाव कर लिया, नर्क का। उसके पक्ष में अपना मत दिया। मतदान के बाद वे नर्क पहुंचे। कोई स्वागत नहीं हुआ। चारों ओर कूड़े के ढेर। गन्दगी। बजबजाती नालियां। गन्दे फटेहाल कपड़ों में, चीखते-बिलखते लोग। कूड़ा बीनकर खाते उनके पुराने साथी।

मान्यवर ने प्रश्न किया – "यह क्या? धोखा? क्लब, रौनक, मजा, कहां गया?" नर्क के इंचार्ज ने मुस्कराते हुए कहा – "कम से कम तुम तो ऐसी बातें न करो। वह चुनाव से पहले का दिन था। तुम प्रचार-प्रसार के समय आये थे। सब ड्रामा था। तुम्हें लुभाने के लिए, प्रायोजित। तुमने अपना कीमती मत दे दिया है। यह स्थिति चुनाव के बाद की है। शेष पूरे समय तुम्हें ज़िन्दगी यहीं बितानी पड़ेगी। दया कर परमात्मा मोक्ष दे दे तो दे दे। यहां दुबारा चुनाव का अवसर नहीं आता। जै जमराज।"

मान्यवर की आंखें खुल गयी।

ड्राइंगरूम वार्ता (२)
अदृश्य पिंजड़े

डा० डी० एस० शुक्ल

यदि आप कभी अति बौद्धिक विचार विमर्श का अनुश्रवण करना चाहें तो मध्यमवर्गीय बैठका (ड्राइंग रूम) आदर्श स्थान है। किसी भी विषय में आप अपना मन्तव्य रखिये। तत्काल ही बैठक में उपस्थित सभी नागर दो पक्षों में बंट जायेंगे। पक्ष और विपक्ष के विचारों का आदान प्रदान प्रारम्भ हो जायेगा।

ऐसी ही बौद्धिक चर्चा मेरे रायबरेली के जिला अस्पताल परिसर के आवास के बैठक में शुरू हुई। कुछ लोग मिलने आये थे परन्तु बारिश के कारण, कुछ चाह कर और कुछ मजबूरी में रुके थे।

चर्चा महापुरुषों के चरित्र के छिद्रान्वेषण से प्रारम्भ हुई। कुछ ने राम पर कुछ ने कृष्ण और कुछ ने महात्मा गाँधी पर आक्षेप लगाये। सभी अपनी अपनी अज्ञानता से गर्वित थे और ज्ञानी होने का अभिनय कर रहे थे। उत्तर-प्रति उत्तर से शुरू हो कर बहस गर्माने लगी। कुछ लोग वीर रस में गोते लगाने लगे। इतने में पं. तिलक शुक्ल जी का आगमन हुआ। वह मेरे पड़ोसी फिजिशियन डा० एन. एन. भटनागर को दिखाने आये थे, बोले कि वर्षा तथा आपके यहां गर्मा गर्म बहस सुनकर मैं आ गया। तिलक जी के आगमन पर वीर रस शांत की ओर मुड़ा। मैंने ज्ञानी तिलक जी को चल रही चर्चा से अवगत कराया और साथ ही अपनी जिज्ञासा उनके सम्मुख रखी "महराज द्यूत क्रीड़ा, चीर हरण, पांडवों के वनवास के समय कृष्ण ने कहा कि मैं स्वयं कौरवों का विनाश कर पांडवों को सिंहासन पर बैठा दूँगा। परन्तु जब युद्ध का समय आया तो कृष्ण ने पांडवों की ओर से युद्ध क्यों नहीं किया ?

तिलक जी मुस्कुराये और सोफे पर पल्थी मार कर बैठते हुए बोले : ७० के दशक में मैंने एक रूसी किताब पढ़ी थी "मनुष्य महाबली कैसे बना"। उसमें अदृश्य पिंजड़ों का जिक्र था। शक्तिशाली गरुड़ का कार्य क्षेत्र सबसे ऊँचे पेड़ों से भी ऊपर होता है जहाँ से वह गोता लगा कर शिकार करता है परन्तु दस पन्द्रह फीट की ऊँचाई पर वह उतना शक्तिशाली नहीं रहता। शेर केवल जमीन पर ही शेर है। पेड़ पर बैठे जानवर के लिए वह शक्तिहीन है। यह उन पशुओं के अदृश्य पिंजड़े हैं। जिनसे बाहर वह चाह कर भी नहीं निकल सकते। मनुष्य इन पर्यावरण के पिंजड़ों को तोड़ सका, परन्तु इन पिंजड़ों के स्थान पर उसने अपने

चारों ओर सामाजिक, विधिक, राजनैतिक और रिश्ते नाते आदि के अनेक पिंजड़ों का निर्माण कर लिया, जो कि पहले वाले पिंजड़ों से ज्यादा दृढ़ है। कोई भी महामानव या अवतारी पुरुष भी इनसे स्वतंत्र नहीं है।

योगेश्वर कृष्ण भी इन पिंजड़ों से पूरी तरह मुक्त नहीं थे।
मेरे मुंह से एकाएक निकला :- अरे यह कैसे !

तिलक जी ने चर्चा जारी रखी - कौरव और पांडवों को लेकर यादवों में बहुत मतभेद था। कृष्ण से पलट बलराम दुर्योधन को अधिक स्नेह करते थे। सात्यकी और कृतवर्मा वैमनस्य के चलते एक पक्ष में नहीं रह सकते थे। इसलिये यदि कृष्ण पांडवों के पक्ष में युद्ध करते तो बलराम दुर्योधन के पक्ष में चले जाते। समस्त यादव दो भागों में बंट जाते। इससे पांडवों की विजय संशय में पड़ सकती थी। कृष्ण की शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा ने कौरव प्रेमी यादवों को निहत्था कर दिया था। पुत्रहठ, अग्रज का मान तथा अन्य तत्कालीन राजनैतिक स्थितियाँ कृष्ण के अदृश्य पिंजड़े थे और वह पांडवों के पक्ष में युद्ध नहीं कर सके।

और रही राम की बात तो आदि कवि ने बालकांड में ब्रह्मर्षि विश्वामित्र द्वारा राम को उपदेश देते हुए लिखा है कि यदि राजपुरुष को राजधर्म का पालन करने में यदि लोक धर्म से हटना पड़ता है तो प्रजा के हित में उसे अधर्म करने से पीछे नहीं हटना चाहिये। अपने पूरे जीवन काल में मर्यादा पुरुषोत्तम ने लोक हित के लिये अधर्म का पाप अपने सिर लिया क्योंकि वह राम थे।

सभी के चेहरे पर संतोष का भाव था। शायद उनकी जिज्ञासा शान्त हो चुकी थी, परन्तु फिर भी एक ने प्रश्न कर ही दिया - "तिलक जी! राम द्वारा साध्वी सीता के त्याग को आप कैसे **Justify** करेंगे"। प्रश्नकर्ता के स्वर में चुनौती थी।

तिलक जी ने मुक्त भाव से हंसते हुए शांति से उत्तर दिया - अरे भाई मैं **Justify** नहीं करूंगा। स्वयं कथाकार ने ही इसको राम के कथन में लिख दिया है। फिर उनकी तरफ मुखातिब हो कर पूछा - "क्या राजा का मतलब जानते हैं ? फिर बगैर उनके उत्तर की प्रतीक्षा के ही कथ्य को आगे बढ़ाया - "रन्जयते इति राजा" जो जन का रंजन करे उसी को राजा कहते हैं। इस परिभाषा पर केवल राम ही खरे उतरते हैं। वाल्मीकि रामायण में कहा है -

"स्नेहं दयान्रुचसौख्यन्रुच यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुन्रुचते नास्ति मे व्यथा"।

यानि - राम कहते हैं "लोक कल्याण के लिये स्नेह दया और सुख तो क्या जानकी जैसी अप्रतिम अर्धांगिनी का भी त्याग करने में मुझे कोई पीड़ा नहीं होगी। राम के लिये लोकरंजन (हित) ही सर्वोपरि था। दंडकारण्य के पीड़ित लोग उनकी प्रजा नहीं थे। फिर भी उन्होंने लोक रंजन के लिय खर दूषण और विश्व विजयी रावण जैसे दुर्द्धर्ष राक्षसों से बैर मोल लिया। आप कह सकते हैं लोक रंजन राम का अदृश्य पिंजड़ा था जिसे वह नहीं तोड़ सके और इसी वजह से वह मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये।

फिर सभी को इंगित कर बोले - अजीब बात है लोग एब्राहम, राजा शिवि और यहां तक कि पन्ना धाय के बलिदान की सराहना करते नहीं थकते पर श्री राम की निन्दा करते हैं। सीता सदृश अर्धांग को काट कर अलग करने पर राम को भी कष्ट तो अवश्य हुआ होगा। कितना लहू-लुहान हुआ होगा अन्तर्मन। पर उस समय के विधान और लोक रंजन के लिये यह भी किया। किसी पात्र की समीक्षा उस समय की रीतियों और विधान को ध्यान रख कर करना चाहिये।

बारिश कभी की रुक चुकी थी। सभी के मस्तिष्क का कुहासा छट चुका था। सब घर जाने के लिये उठ खड़े हुए। सबने श्री तिलक को धन्यवाद दिया और कुछ ने श्रद्धा से तिलक जी के चरण भी स्पर्श किये। उनका व्यक्तित्व सभी की नज़रों में ऊँचा हो गया था।

*एक काल्पनिक पात्र

नेत्रदान करके दृष्टिहीनों को दुनिया दिखाइये

1. नेत्रदान मरणोपरान्त ही होता है, इसमें केवल पुतली निकाली जाती है। चेहरा खराब नहीं होता।
2. उम्र बाधक नहीं होती है। डायबिटीज, उच्च रक्त चाप, कैटरेक्ट, ग्लोकोमा या रेटीना का रोगी अथवा चश्मा पहनने वाला व्यक्ति भी नेत्रदान कर सकता है।
3. मरणोपरान्त नेत्रदान के लिये आई बैंक से तुरन्त 6 घण्टे के अन्दर सम्पर्क करें।
   - मृत्यु प्रमाण पत्र तैयार रखें। पंखे बन्द कर दें।
   - सम्भव हो तो ए0सी0 चला दें। नेत्रदाता के सिर के नीचे दो तकिये रखें।

सम्पर्क करें:

- **आई बैंक के.जी. मेडिकल कालेज** फोन : 0522–2258827
- **लखनऊ आई बैंक** फोनः 0522–2335122, 2332525 टोल फ्री 1919

भारतीय संवत्सर

जितेन्द्र कुमार अवस्थी
सी-२४, 'क' जे रोड, महानगर विस्तार, लखनऊ

'ज्योतिष' विषय वस्तुतः छः वेदाङ्गों में से एक है, जिसका अर्थ है 'ब्रह्माण्डीय-प्रभा'। ग्रीक भाषा में 'ज्यौः' वृहस्पति के लिये प्रयुक्त हुआ है। यह मानव-जीवन के लोक परलोक को प्रभावित करता है। संस्कृत भाषा की साहित्यिक कृतियों में भी, ग्रह-नक्षत्र-ज्योतिष और ज्योति पुञ्जों के बारे में वाल्मीकि, कालिदास, परासर आदि के उल्लेख, यह स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त हैं कि यह विषय जन-सामान्य के दैनिक व्यवहार में कितना अधिक था। यही नहीं हिन्दी के 'तुलसी' और 'जायसी' ने भी अपनी रचनाओं में इस विषय का बहुत उल्लेख किया है। घाघ और भड्डरी की तो सामान्य जीवन के भिन्न क्षेत्रों-परिस्थितियों तथा सूखा, वर्षा, खेती, वायु, बुआई, फसलों के रोगों कटाई, पैदावार आदि की, शुद्ध फलित ज्योतिष सहित, शुभाशुभ स्थितियों की कम से कम २८० कहावतें-दोहे, आज भी उपलब्ध है, जो समाज के विभिन्न वर्गों का मार्ग दर्शन करती रहती हैं।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार समस्त जगत की उत्पत्ति, और लय का कारण ब्रह्मा हैं, जो अपने मान से १०० वर्ष की आयु के हैं। इनका पूर्वार्द्ध बीत चुका है। चार युगों का एक महायुग ४३,२०,००० सौर वर्षों का होता है। एक हजार महायुगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है, जिसे कल्प कहते हैं। एक कल्प में १४ मनु होते हैं, जिनमें से छः कल्प बीत चुके हैं। सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, जिसके २८ वें महायुग के कलियुग का प्रथम चरण चल रहा है।

कलियुग का प्रारम्भ भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी रविवार को श्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में आधी रात को मिथुन लग्न में हुआ था। इसके सौर वर्ष के मान (४,३२,०००) में से ५११२ सौर वर्ष कलयुग के बीत चुके हैं। अपने यहाँ यह गणना मुख्यतः पांच प्रकार से की जाती है। इसमें से वर्ष, ऋतु, अयन, मास और दिन जो सूर्य के चलन वर्ष होते हैं, उन्हें 'सौर-मान' कहते हैं। अर्थात जितने दिनों में सूर्य, मेषादि बारह राशियों का चक्कर (उपभोग) कर लेता है, उसे सौर-वर्ष कहते हैं, जितने दिनों में राशियों में से एक का चलन उपभोग कर लेता है, उसे सौर-मास तथा जितने काल में उसकी किसी राशि के एक अंश (१ डिगरी) का उपभोग करता है, उसे सौर-दिन कहते हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को 'दिनमान' और सूर्यास्त से सूर्योदय के समय को 'रात्रिमान' कहते

हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण विषयों का समाधान जिससे हो, उसे 'पञ्चाङ्ग' कहते हैं। दिन व रात्रि के समय का शनैः शनैः घटना व बढ़ना होने से, प्रायः उत्तरी गोलार्ध में २२/२३ मार्च एवं २२/२३ सितम्बर को दिन व रात्रि बराबर होते हैं; और २२/२३ जून का दिन सबसे बड़ा और रात्रि सबसे छोटी होती है और इसी प्रकार २२/२३ दिसम्बर को सबसे बड़ी रात्रि तथा सबसे छोटा दिन होता है।

एक स्थान से प्रवह द्वारा चल कर जितने समय में फिर उसी स्थान पर आवे, उस काल-अवधि को नाक्षत्र दिन कहते हैं। तारों के मध्य पश्चिम से पूर्व की ओर खिसकता हुआ जिस मार्ग से सूर्य वर्ष भर में एक चक्कर लगाता हुआ दिखाई पड़ता है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं। इसी क्रान्तिवृत्त के २७वें एक भाग का अर्थात १३$^{1}/_{3}$ अंश को नक्षत्र कहते हैं, जिनके नाम उनके आकारों के अनुसार क्रमशः इस प्रकार है - १. अश्विनी २. भरणी ३. कृतिका ४. रोहिणी ५. मृगशिरा ६. आर्द्रा ७. पुनर्वसु ८. पुष्य ९. अश्लेषा १०. मघा ११. पूर्वाफाल्गुनी १२. उत्तराफाल्गुनी १३. हस्त १४. चित्रा १५. स्वाति १६. विशाखा १७. अनुराधा १८. ज्येष्ठा १९. मूल २०. पूर्वाषाढ २१. उत्तराषाढ अभिजित (उत्तराषाढ के चतुर्थ चरण और श्रवण के पहले पन्द्रहवें भाग) को मिलाकर २२. श्रवण २३ धनिष्ठा २४. शतभिषा २५. पूर्व भाद्रपदा २६. उत्तरभाद्रपदा २७. रेवती।

उक्त क्रान्तिवृत्त के १२ भाग क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन, राशि अपने आकार स्वरूप कहलाते हैं।

इस क्रान्तिवृत्ति का ३६० वां भाग अंश कहलाता है। अंश का साठवाँ भाग कला और कला का साठवाँ भाग विकला कहलाता है। सूर्योदय काल में जितनी घटी और पल तक जो नक्षत्र रहता है उस के सामने वही घटी पल पंञ्चाग में लिखी रहती है। जो नक्षत्र एक सूर्योदय के बाद आरम्भ होता है, और दूसरे सूर्योदय से पहले समाप्त हो जाता है उसका समय पञ्चाङ्ग में उसके नीचे छोटे अंकों में लिख दिया जाता है, किन्तु उसका नाम नहीं लिखा जाता है।

जिस दिन चन्द्रमा-सूर्य एक राशि में हो वह अमावस्या तिथि कहलाती है। एक बार चन्द्रमा और सूर्य एक राशि में होकर पुनः जितने समय में दूसरी बार एक साथ होते हैं, उसके मध्य में जितने दिन लगते हैं, उसे चन्द्र मास कहते हैं, अर्थात इसका ३०वाँ भाग मध्यम चान्द्र दिन और प्रत्येक तिथि का स्पष्ट चलन (उपभोग) पूरा करता है, यथा प्रतिपदा (परेवा), दूज, तीज, चौथ, पञ्चमी, छठ, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और जिस समय सूर्य

और चन्द्र एक सीध में होते हैं, उस समय अमावस्या का अन्त और प्रतिपदा (परेवा) प्रारम्भ होता है। प्रत्येक १२ अंश के अन्तर पर अगली तिथि एक-एक कर आती रहती है। १५वीं तिथि पूर्णिमा वा अन्त होती है, और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा प्रारम्भ होती है। फिर अमावस्या पर ३० तिथियाँ बीत चुकती हैं, इसलिये पञ्चाङ्गम् में अमावस्या की तिथि के स्थान पर ३० लिख दिया जाता है। अमावस्या से पूर्णिमा तिथि को शुक्लपक्ष और पूर्णिमा से अमावस्या तक को कृष्णपक्ष कहते हैं। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक के काल को सावन (अर्थात यज्ञ) दिन कहते हैं।

एक दिनमान व एक रात्रिमान अर्थात एक सूर्योदय काल से दूसरे सूर्योदय तक के काल की गणना एक 'वार' के रूप में होती है, यथा रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार और शनिवार।

तिथि-क्षय-तिथि-वृद्धिः पञ्चाङ्ग में कभी-कभी तिथि की पंक्ति में कोई तिथि नहीं लिखी रहती है अथवा तिथि-मान की पंक्ति में दो मान लिखे रहते हैं अथवा कभी-कभी कोई तिथि दो दिन लगातार लिखी रहती है। इसका कारण यह कि सूर्य, चन्द्र की गतियां सदा समान नहीं रहती। फलतः तिथियों का मान भी सदा समान नहीं रहता। तिथि का अधिक से अधिक मान ६५ घटी के लगभग और कम से कम ५४ घटी के लगभग होता है। किन्तु एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सदैव कल्पित ६० घटी का ही होता है। इसलिये दिन में किसी समय कोई तिथि पूरी हो सकती है और कभी-कभी दो तिथियाँ एक ही वार (दिन) में पूर्ण होती हैं, तथा 'वार' (दिन) पूरा होने से पहले तीसरी तिथि लग जाती है। ऐसी दशा में उस दिन (वार) को सूर्योदय काल में जो तिथि रहती है वही मानी जाती है और अगले दिन (वार) को तीसरी तिथि। दूसरी तिथि का मान पंञ्चाङ्ग में पहली तिथि के नीचे लिखा रहता है, किन्तु व्यवहार में दूसरी तिथि नहीं मानी जाती है। ऐसी तिथि को क्षय तिथि या हानि तिथि कहते हैं। इन्हीं सब कारणों से एक पखवारे में कभी १६, कभी १५, कभी १४, या कभी-कभी तो १३ दिन हो जाते हैं।

अधिमास-क्षयमासः-चान्द्रमास की गणित से वर्ष में ३५४ दिन ९ घन्टे तथा सौर मास की गणित से ३६५ दिन छः घन्टे होते हैं। इस प्रकार १ वर्ष में चान्द्र और सौर मास में लगभग ११ दिनों का अन्तर आ जाता है। तीन वर्षों में यह अन्तर कुल मिलाकर एक मास का हो जाता है। इस एक माह का समायोजन भारतीय ज्योतिष में मल-मास नाम से होता है। प्रचलित ग्रिगेरियन कलेन्डर में सही नेव व 'लीप इयर' के रूप में है। भारत के राष्ट्रिय कलेन्डर, शक, में इस का समायोजन प्रति त्रैमास में किया जाता है। चार महीने ३०-३० दिन के और सात महीने ३१-३१ दिन के फरवरी २८ दिन की तथा लीप इयर में २९ दिन।

C.V. NETRALAYA

Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow.

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon
Dr. V. K. Mishra

सरस्वती पत्रिका के हीरक जयन्ती अंक से पृष्ठ १७७ से १८३

दुलाईवाली

एक वङ्ग महिला

काशी जी के दशाश्वमेघ घाट पर स्नान करके एक मनुष्य बड़ी व्यग्रता के साथ गोदौलिया की तरफ आ रहा था। एक हाथ में एक मैली सी तौलिया में लपेटी हुई भीगी धोती और दूसरे में सुरती की गोलियों की कई डिबियाँ और सुँघनी की एक पुड़िया थी। उस समय दिन के ग्यारह बजे थे। गोदौलिया की बाईं तरफ जो गली है, उसके भीतर एक और गली में थोड़ी दूर पर, एक टूटे से पुराने मकान में वह जा घुसा। मकान के पहले खण्ड में बहुत अंधेरा था; पर ऊपर की जगह मनुष्य के वासोपयोगी थी। नवागत मनुष्य धड़धड़ाता हुआ ऊपर चढ़ गया। वहां एक कोठरी में उसने हाथ की चीजें रख दीं और, "सीता! सीता!" कहकर पुकारने लगा। "क्या है?" कहती हुई एक दस बरस की बालिका आ खड़ी हुई। तब उस पुरुष ने कहा, "सीता! जरा अपनी बहिन को बुला ला।" "अच्छा" कह कर सीता गई, और कुछ देर में एक नवीना स्त्री आकर उपस्थित हुई। उसे देखते ही पुरुष ने कहा - "लो हम लोगों को तो आज ही जाना होगा।" इस बात को सुनकर स्त्री कुछ आश्चर्य युक्त होकर और झुंझला कर बोली -

" आज ही जाना होगा! यह क्यों? भला आज कैसे जाना हो सकेगा? ऐसा ही था तो सबेरे भैया से कह देते। तुम तो जानते हो कि मुंह से कह दिया; बस छुट्टी हुई। लड़की कभी विदा की होती तो मालूम पड़ता। आज तो किसी सूरत जाना नहीं हो सकता।"

"तुम आज कहती हो! हमें तो अभी जाना है। बात यह है कि आज ही नवलकिशोर कलकत्ते से आ रहे हैं। आरे से अपनी नई बहू को भी साथ ला रहे हैं। सो उन्होंने हमें आज ही जाने के लिए इसरार किया है। हम सब लोग मोगलसराय से साथ ही इलाहाबाद चलेंगे। उनका तार मुझे घर से निकलते ही मिला। इसी से मैं झट नहा धोकर लौट आया। बस अब करना ही क्या है! कपड़ा वपड़ा जो कुछ हो बांध बूंध कर, घंटे भर में खा पीकर, चली चलो। जब हम तुम्हें विदा कराने आये ही हैं तब कल के बदले आज ही सही।"

"हां यह बात है। नवल जो चाहें करावें। क्या एक ही गाड़ी में नहीं जाने से दोस्ती में बट्टा लग जायेगा? अब तो किसी तरह रुकोगे नहीं, जरूर ही उनके साथ जाओगे। पर मेरे तो नाकों दम आ जायेगी।"

"क्यों? किस बात से?"

"उनकी हंसी से और किससे! हंसी ठट्ठा भी राह से अच्छी लगती है। उनकी हंसी मुझे नहीं भाती। एक रोज मैं चौके में बैठी पूड़ियाँ काढ़ रही थी, कि इतने में न जाने कहां से आकर नवल चिल्लाने लगे, "ए बुआ! ए बुआ! देखो तुम्हारी बहू पूड़ियाँ खा रही है।" मैं तो मारे शरम के मर सी गई। हाँ भाभी जी ने बात उड़ा दी सही। वे बोलीं, "खाने दो, खाने पहनने के लिए तो आई ही है।" पर मुझे उनकी हंसी बहुत बुरी लगी।"

"बस इसी से तुम उनके साथ नहीं जाना चाहती ? अच्छा चलो मैं नवल से कह दूंगा कि यह बेचारी कभी रोटी तक तो खाती ही नहीं, पूरी क्यों खाने लगी।"

इतना कहकर वंशीधर कोठरी के बाहर चले आये, और बोले, "मैं तुम्हारे भैया के पास जाता हूँ। तुम रो रुलाकर तैयार हो जाना।"

इतना सुनते ही जानकी देई की आंखें भर आईं। और असाढ़ सावन की ऐसी झड़ी लग गई।

(२)

वंशीधर इलाहाबाद के रहने वाले हैं। बनारस में ससुराल है। स्त्री को विदा कराने आये हैं। ससुराल में एक साले, साली और सास के सिवा और कोई नहीं है। नवल किशोर इनके दूर के नाते में ममेरे भाई हैं। पर दोनों से मित्रता का ख्याल अधिक है। दोनों में गहरी मित्रता है। दोनों एक जान दो कालिब हैं।

उसी दिन वंशीधर का जाना स्थिर हो गया। सीता, बहन के संग जाने के लिए रोने लगी। माँ रोती धोती लड़की की विदा की सामग्री इकट्ठी करने लगी। जानकी-देई भी रोती ही रोती तैयार होने लगी। कोई चीज भूलने पर धीमी

आवाज से माँ को याद भी दिलाती गई। एक बजने पर स्टेशन जाने का समय आया। अब गाड़ी या इक्का लाने कौन जाय? ससुराल वालों की अवस्था अब आगे की सी नहीं कि दो चार नौकर चाकर हर समय बने रहें। सीता के बाप के न रहने से काम बिगड़ गया है। पैसे वाले के यहाँ नौकर चाकरों से सिवा और भी दो चार खुशामदी घेरे रहते हैं। छूछे को कौन पूछे? एक कहारिन है; सो भी इस समय कहीं गई है। सालेराम की तबीयत अच्छी नहीं। वे हरघड़ी बिछौने से बातें करते हैं। तिस पर भी आप कहने लगे - "मैं ही धीरे-धीरे जाकर कोई सवारी ले आता हूँ। नजदीक तो है।" वंशीधर बोले, - "नहीं, नहीं, तुम क्यों तकलीफ करोगे? मैं ही जाता हूँ।"

जाते जाते वंशीधर विचारने लगे कि इक्के की सवारी तो भले घर की स्त्रियों के बैठने लायक नहीं होती। क्योंकि एक तो उतने ऊँचे पर चढ़ना पड़ता है; दूसरे पराये पुरुष के संग एक साथ बैठना पड़ता है। मैं एक पालकी गाड़ी ही कर लूँ। उसमें सब तरह का आराम रहता है।" पर जब गाड़ी वालों ने डेढ़ रुपया किराया मांगा, तब, वंशीधर ने मनमें कहा - "चलो इक्का ही सही। पहुंचने से काम। कुछ नवल किशोर तो यहां से साथ हैं नहीं। इलाहाबाद में देखा जायगा।" वंशीधर इक्का ले आये, और जो कुछ असबाब था इक्के पर रख कर आप भी बैठ गये। जानकी देई बड़ी विकलता से रोती हुई इक्के पर जा बैठी। पर इस अस्थिर संसार में स्थिरता कहाँ? यहाँ कुछ भी स्थिर नहीं। इक्का जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया, वैसे ही वैसे जानकी की रुलाई भी कम होती गई। सिकरौल के स्टेशन के पास पहुंचते-पहुंचते जानकी अपनी आंखें अच्छी तरह पोंछ चुकी थी। दोनों चुपचाप चले जा रहे थे, कि अचानक वंशीधर की नजर अपनी धोती पर पड़ी; और "अरे एक बात तो हम भूल ही गये।" कह कर पछतासा उठे। इक्के वाले के कान बचाकर जानकी जी ने पूछा, "क्या हुआ? क्या कोई जरूरी चीज भूल आये?"

"नहीं, एक देशी धोती पहिनकर आना था; सो भूलकर विलायती ही पहिन आये। नवल कट्टर स्वदेशी हुए हैं न? वे बंगालियों से भी बढ़ गये हैं। देखेंगे तो दो चार सुनाये बिना न रहेंगे और, बात भी ठीक है। नाहक विलायती

चीजें मोल लेकर क्यों रुपये की बरबादी की जाय। देशी लेने से भी दाम लगेगा सही; पर रहेगा तो देश ही में।"

जानकी जी जरा भौहें टेढ़ी करके बोली, "उँह धोती तो धोती; पहिनने से काम। क्या यह बुरी है ?"

इतने में स्टेशन के कुलियों ने आ घेरा। वंशीधर एक कुली करके चले। इतने में इक्के वाले ने कहा, "इधर से टिकट लेते जाइए। पुल के उस पार तो ड्योढ़े दरजे का टिकट मिलता है।"

वंशीधर फिर कर बोले, "अगर मैं ड्योढ़े दरजे ही का टिकट लूँ तो ?"

इक्के वाला चुप हो रहा। "इक्के की सवारी देखकर इसने ऐसा कहा" - यह कहते हुए वंशीधर आगे बढ़े। यथा समय रेल पर बैठकर वंशीधर राजघाट पार करके मुगलसराय पहुँचे। वहाँ पुल लाँघकर दूसरे प्लैटफार्म पर जा बैठे। आप नवल से मिलने की खुशी में प्लेटफार्म के इस छोर से उस छोर तक टहलते रहे। देखते देखते गाड़ी का धुआँ दिखलाई पड़ा। मुसाफिर अपनी अपनी गठरी संभालने लगे। रेलदेवी भी अपनी चाल धीमी करती हुईं गम्भीरता से आ खड़ी हुई। वंशीधर एक बार चलती गाड़ी ही में शुरू से आखीर तक देख गये। पर नवल का कहीं पता नहीं। वंशीधर फिर सब गाड़ियों को दोहरा गये, तेहरा गये, भीतर घुस घुस कर एक एक डिब्बे को देखा किन्तु नवल न मिले। अन्त को आप खिजला उठे, और सोचने लगे कि मुझे तो वैसी चिट्ठी लिखी, और आप न आया। मुझे अच्छा उल्लू बनाया। अच्छा जायेंगे कहाँ? भेंट होने पर समझ लूंगा।" सबसे अधिक सोच तो इस बात का था कि जानकी सुनेगी तो ताने पर ताना मारेगी। पर अब सोचने का समय नहीं। रेल की बात ठहरी। वंशीधर झट गये और जानकी को लाकर जनानी गाड़ी में बिठाया। वह पूछने लगी, "नवल की बहू कहाँ हैं?" "वह नहीं आये, कोई अटकाव हो गया।" कहकर आप बगल वाले कमरे में जा बैठे। टिकट तो ड्योढ़े का था; पर ड्योढ़े दरजे का कमरा कलकत्ते से आने वाले मुसाफिरों से भरा था। इसलिए तीसरे दर्जे ही में बैठना पड़ा। जिस गाड़ी में वंशीधर बैठे थे उसके सब कमरों में मिलाकर कुल दस ही

बाहर स्त्री पुरुष थे। समय पर गाड़ी छूटी। नवल की बातें, और न जाने क्या अगड़ बगड़, सोचते गाड़ी कई स्टेशन पास करके मिरजापुर पहुंची।

(३)

मिरजापुर में पेटराम की शिकायत शुरू हुई। उसने सुझाया कि इलाहाबाद पहुंचने में अभी देरी है। चलने के झंझट में अच्छी तरह उसकी पूजा किये बिना ही वंशीधर ने बनारस छोड़ा था। इसलिए आप झट प्लैटफार्म पर उतरे; और पानी के बम्बे से हाथ मुँह धोकर, एक खोंचे वाले से थोड़ी सी ताजी पूड़ियाँ और मिठाई लेकर, निराले में बैठ आपने उन्हें ठिकाने पहुंचाया। पीछे से जानकी की सुध आई। सोचा कि पहले पूछ लें, तब कुछ मोल लेंगे। क्योंकि स्त्रियाँ नटखट होती हैं। वे रेल पर खाना पसन्द नहीं करतीं। पूछने पर वही बात हुई। तब वंशीधर लौट कर अपने कमरे में आ बैठे। यदि वे चाहते तो इस समय ड्योढ़े में बैठ जाते; क्योंकि अब भीड़ कम हो गई थी। पर उन्होंने कहा, थोड़ी देर के लिए कौन बखेड़ा करे।

वंशीधर अपने कमरे में बैठे तो दो एक मुसाफिर अधिक देख पड़े। आगे वालों में से एक उतर भी गया था। जो लोग थे सब तीसरे ही दर्जे के योग्य जान पड़ते थे; अधिक सभ्य कोई थे तो वंशीधर ही थे। उनके कमरे के पास वाले कमरे में एक भले घर की स्त्री बैठी थी। वह बेचारी सिर से पैर तक ओढ़े, सिर झुकाये, एक हाथ लंबा घूंघट काढ़े, कपड़े की गठरी सी बनी बैठी थी। वंशीधर ने सोचा इनके संग वाले भद्र पुरुष के आने पर उनके साथ बातचीत करके समय बितावेंगे। एक दो करके तीसरी घंटी बजी। तब वह स्त्री कुछ अकचका कर, थोड़ा सा मुँह खोल, जंगले से बाहर देखने लगी। ज्योंही गाड़ी छूटी, वह मानों कांप सी उठी। रेल का देना लेना तो हो ही गया था। अब उसको किसी की क्या परवा? वह अपनी स्वाभाविक गति से चलने लगी। प्लैटफार्म पर भीड़ भी न थी। केवल दो चार आदमी रेल की अन्तिम विदाई तक खड़े थे। जब तक स्टेशन दिखलाई दिया तब तक वह बेचारी बाहर ही देखती रही। फिर अस्पष्ट स्वर से रोने लगी। उस कमरे में तीन चार प्रौढ़ा ग्रामीण-स्त्रियाँ भी थीं। एक, जो उसके पास ही थी, कहने लगी,

"अरे-इनका मनई तो नाहीं आईलेन। हो देखहो रोवल करथईन।"

दूसरी – "अरे दुसर गाड़ी में बैठा होइँहें।"

पहली – "दुर बौरही ! ई जनानी गाड़ी थोड़े है"

दूसरी-"तऊ हो भलुतो कहू।" कहकर दूसरी भद्र महिला से पूछने लगी, "कौन गाँव उतरबु बेटा! मीरजै-पूरा चढ़ी हऊ न।?" इसके जवाब में उसने जो कहा सो वह न सुन सकी। तब पहली बोली –

"हट हम पुँछिलान; हम कहा काहां ऊतरबू हो? आँय ईलाहाबास?"

दूसरी – "ईलाहाबास कौन गाँव हौ गोईंयाँ?"

पहली-"अरे नाहीं जनँलू? पैयाग जी, जाहाँ मनइ मकर नाहाए जाला।"

दूसरी-"भला पैयाग जी काहे न जानीथ; ले, कहैके नाहीं, तोहरे पच के धरम से चार दाँई नहाए चुकी हँइ। एसों हो सोमवारी, अउर गहन, दका, दका, लाग रहा तउन तोहरे काशी जी नाँहाय गइ रहे।"

पहली – "आवै जाय के तो सब अऊते जाता बटले बाटेन। फुन यह साइत तो विचारो विपत में न पड़ल बाटिन। हे हम पचा हइ; राजघाट टिकस कटऊली; मोंगल के सरायँ उतरलीह; होद पुन; चढ़लीह।"

दूसरी – "ऐसे एक दाँइ हम आवत रहे। एक मिली औरो मोरे सँघे रही। द कोने टिसनीया पर उकर मलिकवा उतरे से कि जुरतँइहैं गड़िया खुली। अब भईया उः गरा फाड़ फाड़ नरियाय-ए साहब गड़ीया खड़ीकर! ए साहेब गड़िया तँनी खड़ीकर।" भला गड़िया दहिनाती काहै के खड़ी होय?"

पहली-"उ मेहररूवा बड़ी उजबक रहल। भला केहू के चिल्लाए से रेलीऔ कहूँ खड़ी होला?"

इसकी इस बात पर कुल कमरे वाले हँस पड़े। अब जितने पुरुष स्त्रियाँ थीं, एक से एक अनोखी बातें कहकर अपने अपने तजरुबे बयान करने लगीं। बीच बीच में उस अकेली अबला की स्थिति पर भी दुःख प्रकट करती जाती थीं।

तीसरी स्त्री बोली – "टीक्कसिया पल्ले बाय द नाँही। सहेबबा सुनि तो कलकत्ते ताँइ ले मसुलिया लेइ। अरे इहो तो नाँही कि दूर से आवत रहलेन, फरागत के बदे उतरलेन।

चौथी – "हम तो इनके सँघे के आदमी के देखबो न किहा गोइयाँ।"

तीसरी – "हम देखे रहली हो, मजेक टोपी दिहले रहलेन को!"

इस तरह उनकी बेसिर पैर की बातें सुनते सुनते वंशीधर ऊब उठे। तब वे उन स्त्रियों से कहने लगे –

"तुम तो नाहक उन्हें और भी डरा रही हो। जरूर इलाहाबाद तार गया होगा और दूसरी गाड़ी से वे भी वहाँ पहुँच जायँगे। मैं भी इलाहाबाद ही जा रहा हूँ। मेरे संग भी स्त्रियाँ हैं। जो ऐसा ही है तो दूसरी गाड़ी के आने तक मैं स्टेशन ही पर ठहरा रहूँगा। तुम लोगों में से यदि कोई प्रयाग उत्तरे तो थोड़ी देर के लिए स्टेशन पर ठहर जाना। इनको अकेले छोड़ देना उचित नहीं। यदि पता मालूम हो जायगा तो मैं इन्हें इनके ठहरने के स्थान पर भी पहुँचा दूँगा।"

वंशीधर की इन बातों से उन स्त्रियों की वाक्य-धारा दूसरी ओर बह चली – "हाँ यह बात तो आप भल कही।" "नाहीं भइया! हम पचे काहिके केहुसे कुछ कही। अरे एक के एक करत न बाय तो दुनिया चलत कैसे बाय ?" इत्यादि ज्ञान-गाथा होने लगी। कोई कोई तो उस बेचारी को सहारा मिलते देख खुश हुए औरु कोई कोई नाराज भी हुए। क्यों, सो मैं आप से नहीं बतला सकती। उस गाड़ी में जितने मनुष्य थे सभी ने इस विषय में कुछ न कुछ कह डाला था। पिछले कमरे में केवल एक स्त्री जो फरासीसी छींट की दुलाई ओढ़ अकेली बैठी थी, कुछ नहीं बोली। कभी कभी घूंघट के भीतर से एक आँख निकाल कर वंशीधर की ओर वह ताक देती थी और, सामना हो जाने पर, फिर मुँह फेर लेती थी। वंशीधर सोचने लगे कि "यह क्या बात है? देखने में तो यह भले घर की मालूम होती है, पर आचरण इसका अच्छा नहीं।"

गाड़ी इलाहाबाद के पास पहुंचने को हुई। वंशीधर उस स्त्री को धीरज दिलाकर आकाश-पाताल सोचने लगे। यदि तार में कोई खबर न आई होती तो

दूसरी गाड़ी तक स्टेशन पर ही ठहरना पड़ेगा और जो उससे भी कोई न आया तो क्या करूँगा? जो हो गाड़ी नैनी से छूट गई। अब साथ की उन अशिक्षिता स्त्रियों ने फिर मुँह खोला। "क भईया, जो केहु बिन टिक्कस के आवत होय तो ओकर का सजाय होला ?" "अरे ओंका ई नाहीं चाहत रहा कि मेहरारू के तो बैठा दिहलेन, अउर अपुआ तऊन टिक्कस लेइ के चल दिहलेन।' किसी किसी आदमी ने तो यहाँ तक दौड़ मारी कि रात को वंशीधर इसके जेवर छीन कर रफूचक्कर हो जायेंगे। उस गाड़ी में एक लाठी वाला भी था। उसने खुल्लम खुल्ला कहा - "का बाबू जी! कुछ हमरो साझ?" इसकी बात पर वंशीधर क्रोध से लाल हो गये। उन्होंने उसे खूब धमकाया। उस समय तो वह चुप हो गया, पर यदि इलाहाबाद उतरता तो वंशीधर से बदला लिए बिना न रहता।

(४)

वंशीधर इलाहाबाद में उतरे। एक बुढ़िया को भी वहीं उतरना था। उससे उन्होंने कहा कि, "उनको भी अपने संग उतार लो।" फिर उस बुढ़िया को उस स्त्री के पास बिठाकर आप जानकी को उतारने गये। जानकी से सब हाल कहने पर वह बोली - "अरे जाने भी दो; किस बखेड़े में पड़े हो।" पर वंशीधर ने न माना। जानकी को और उस भद्र महिला को एक ठिकाने बिठाकर आप स्टेशन मास्टर के पास गये। वंशीधर के जाते ही वह बुढ़िया, जिसे उन्होंने रखवाली के लिए छोड़ा था, किसी बहाने भग गई। स्टेशन मास्टर से पूछने पर मालूम हुआ कि कोई तार नहीं आया। अब तो वंशीधर बड़े असमंजस में पड़े। टिकट के लिए बखेड़ा होगा। क्योंकि वह स्त्री बे-टिकट है। लौटकर आये तो किसी को न पाया। "अरे ये सब कहाँ गईं ? यह कहकर चारों तरफ देखने लगे। कहीं पता नहीं। इस पर वंशीधर घबराये। "आज कैसी बुरी साइत में घर से निकले कि एक के बाद दूसरी आफत में फँसते चले आ रहे हैं।" इतने में अपने सामने उस दुलाई वाली को आते देखा। "तू ही उन स्त्रियों को कहीं ले गई। है।" इतना कहना था कि दुलाई से मुंह खोलकर नवलकिशोर खिलखिला उठे।

"अरे यह क्या? सब तुम्हारी ही करतूत है! अब मैं समझ गया। कैसा गजब तुमने किया है? ऐसी हँसी मुझे नहीं अच्छी लगती। मालूम होता है वह तुम्हारी ही

बहू थी। अच्छा तो वे गई कहाँ ?"

"वे लोग तो पालकी गाड़ी में बैठी है। तुम भी चलो।"

"नहीं मैं सब हाल सुन लूंगा तब चलूंगा। हाँ यह तो कहो, तुम मिर्जापुर में कहाँ से आ निकले?"

"मिरजापुर नहीं मैं तो कलकत्ते से, बल्कि मुगलसराय से, तुम्हारे साथ चला आ रहा हूँ। तुम जब मोगलसराय में मेरे लिए चक्कर लगाते थे तब मैं ड्योढ़े दर्जे में ऊ वाले बेंच पर लेटे तुम्हारा तमाशा देख रहा था। फिर मिरजापुर में जब तुम पेट के धंधे में लगे थे, मैं तुम्हारे पास से निकल गया पर तुमने न देखा। मैं तुम्हारी गाड़ी में जा बैठा। सोचा कि तुम्हारे आने पर प्रकट हाऊँगा। फिर थोड़ा और देख लें, करते करते यहाँ तक नौबत पहुँची। "अच्छा अब चलो, जो हुआ उसे माफ करो!"

यह सुन वंशीधर प्रसन्न हो गये। दोनों मित्रों में बड़े प्रेम से बातचीज होने लगी। वंशीधर बोले - "मेरे ऊपर तो जो कुछ बीती सो बीती, पर वह बेचारी, जो तुम्हारे से गुनवान के संग पहली ही बार रेल से आ रही थी, बहुत ही तंग हुई। उसे तो तुमने नाहक रुलाया।" वह बहुत ही डर गई थी।

"नहीं जी! डर किस बात का था? हम, तुम, दोनों गाड़ी में न थे?"

"हाँ पर, यदि मैं स्टेशन मास्टर से इत्तिला कर देता तो बखेड़ा खड़ा हो जाता न ?"

"अरे तो क्या मैं मर थोड़े ही गया था! चार हाथ की दुलाई की बिसात ही कितनी?"

इसी तरह बातचीत करते करते दोनों गाड़ी के पास आये। देखा तो दोनों मित्र-बंधुओं में खूब हँसी हो रही है। जानकी कह रही थी - "अरे तुम जानों क्या! इन लोगों की हँसी ऐसी ही होती है। हँसी में किसी के प्राण भी निकल जाँय तो भी इन्हें दया न आवे।"

खैर दोनों मित्र अपनी अपनी घरवाली को लेकर राजी खुशी घर पहुँचे और मुझे भी उनकी यह राम-कहानी लिखने से छुट्टी मिली।

राष्ट्र नायक

प्रमोद शंकर शुक्ल
रायबरेली

कल तक समझा जिन्हें युधिष्ठिर, वे धृतराष्ट्री पूत हो गये।
भारत माँ की पुण्य कोख में, कैसे पूत कपूत हो गये।।
कल तक गंगा जल निर्मल था
आज हुआ दूषित तन मन है।
कल तक जिनके तन लंगोट था
बना धनी गद्दार वतन है।।
भारत की कुल मरियादा के, वे सब अब यमदूत हो गये।
भारत माँ की पुण्य कोख में, कैसे पूत कपूत हो गये।।
बागों में अंकुर आये थे
उपवन बेचा रखवालों में।
लाश दफन भी नहीं हुई थी
बेचा कफन कब्र वालों ने।।
हंस कहाने वाले पंछी, मुर्दाखोर गिद्ध हो गये।
भारत माँ की पुण्य कोख में, कैसे पूत कपूत हो गये।।
भारत के नायक बन करके
शपथ लिया कुर्सी को पाकर।
सर नीचा कर दिया देश का
भारत माँ का दूध लजाकर।।
मरघट तट को जाने वाले बिना मरे ही प्रेत हो गये।
भारत माँ की पुण्य कोख में, कैसे पूत कपूत हो गये।।

Surrogate Mother
या किराये की कोख

श्रीमती नीरज शुक्ला ''रानी''

किट्टी पार्टी में टी वी सीरियल की चर्चा के दौरान एक मैडम ने जिज्ञासा की कि क्या एक स्त्री का बच्चा दूसरी स्त्री अपने गर्भ में पाल सकती है। इस पर सरोगेट मदर पर बात होने लगी। यह जान कर उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह शब्द और प्रक्रिया अब काफी प्रचलित है।

हम सभी यह सोच कर आनन्द ले रहे थे कि २१वीं सदी में लड़कियाँ शायद माँ बनना ही न चाहें। किराया दे कर बच्चा बनवाना ज्यादा सुविधाजनक होगा। नौ महीने की परेशानी और प्रसव वेदना से भी मुक्ति।

आजकल स्त्री और पुरुष दोनों ही भाग दौड़ की जिन्दगी जी रहे हैं। परिवार या बच्चे कब बनायें यह सोचना उनके लिये बहुत मुश्किल महसूस होता होगा। यदि देखा जाय तो उनका नौकरी के साथ बच्चों के बारे में सोचना एक समस्या है। इस पीढ़ी में एक दम्पति के पास एक बच्चा भी मुश्किल से दिखाई पड़ता है। दूसरे बच्चे के बारे में वह सोचना ही नहीं चाहते। काम करती पत्नी की तो मजबूरी है परन्तु बहुत सी नान वर्किंग पत्नियाँ भी दूसरे बच्चे के बारे में सोचना नहीं चाहतीं। यह शायद न्यूक्लियर फैमिली की विवशता है या यह धारणा उन्हें समाज में आधुनिक होने का एहसास दिलाती। इस पीढ़ी में शायद ही कोई घर होगा जिसमें एक से अधिक शिशु हों। मध्यम वर्ग और उच्च वर्गीय परिवार जो एक से अधिक बच्चे एफोर्ड कर सकते हैं वह बच्चों पर रोक लगाये हैं और जो एफोर्ड नहीं कर सकते उनमें शिशु दर अधिक है। नतीजा कुपोषण अशिक्षा अधिक मृत्यु दर। इस प्रकार यदि अन्य अर्थशास्त्र के कारणों के अलावा यह सोच भी राष्ट्र में गरीबों की संख्या बढ़ाती है।

अकेले माँ बाप की अकेली संतानें बहुत से रिश्तों से अनजाने रह जायेंगे। न भाई न बहन न चाचा न मामा। देवर और साली जैसे मधुर रिश्तों को जानने के लिये पुरानी फिल्मों को देखना होगा। उन अकेलों के अकेले माँ बाप के बाद वह स्वयं अकेले रह जायेंगे। किसी को किसी से मतलब नहीं रहेगा। 'हम' 'मैं' में बदल जायेगा। यह भावना आज भी देखी जा सकती है। शादी जैसे रिश्तों में बंधना भी मुश्किल होगा। क्योंकि शादी के लिये रिश्ते में बंधना होगा और बंधन कोई नहीं चाहेगा नहीं।

जो लोग विवाह कर परिवार बसायेंगे वह भी शायद गर्भ की जिम्मेदारियां नहीं उठाना चाहेंगे। पैसा खर्च कर सरोगेट मदर से बच्चा पाकर केश में पाल लिया जायेगा। कारपोरेट जगत को भी फायदा होगा क्योंकि उनको मैटरनिटी लीव नहीं देनी पड़ेगी।

वैसे यह सोच कर हैरानी होती है कि धारिणी के गुण यदि बच्चे में आते हैं तो होने वाला शिशु अभिमन्यु या चोर अथवा डाकू भी हो सकता है। खैर छोड़िये समय के साथ तो चलना ही चाहिये। समय हमेशा बदलता रहता है। यदि यह आने वाले समय की मांग है तो दखलंदाजी से कुछ नहीं होने का। परन्तु यह विचार का विषय अवश्य है कि जैसे नई जगह जाने पर बाई ढूढ़ी जाती है वैसे शादी होने पर सरोगेट मदर की तलाश करनी पड़ेगी।

एक विचार: साधारण प्रसव में गर्भ के ९ महीने माँ का अपने अजन्मे शिशु के बीच में एक भावनात्मक संबंध बन जाता है। परन्तु सरोगेट मदर के गर्भ में पल रहे शिशु का वह एहसास भ्रूण की हलचल उसकी वैधानिक माँ नहीं महसूस कर सकती। उस बच्चे से उसका रिश्ता केवल धन का ही होता है जो कि वह शिशु की जैविक माँ को प्रतिफल में देती है। सरोगेसी के लिए महिला का मिलना भी आसान नहीं होता। इसलिए यदि सरोगेसी की जगह किसी अनाथ शिशु को गोद ले लिया जाय तो, वह शिशु भी दम्पति को उतना ही सुख दे सकता है और इस प्रकार शिशु भी अनाथ होने से बच जायेगा।

फूलन देबी बनाम घरवाली

शम्भु प्रसाद पाँडे 'शम्भु'
मलिहाबाद, लखनऊ

फूलन देवी, फूलन देवी,
चौगिरदा सोर भवा भारी।
फूलन देबी ते का कम है,
हमरे लरिकन की महतारी।।
उनके हथियार नए ढंग के,
आटोमेटिक गन भयकारी।
इनके हथियार पुरनके हैं,
बेलन, चिमटा, पाटा थारौ।।
अब डाकुन संग करैं धावा,
लूटैं वै राति अँधेरिया माँ।
है लरिकन के संग सजि धजि कै,
लुटवावैं बीच बजरिया माँ।।
उइ तनती हैं बन्दूक छादि,
ई तनती हम पर भौंह तान
उनकी बन्दूखैं तड़ातड़ी,
इनकी बोलिन ते विकल प्रान।
उइ याक दई जेहिका लुटतीं,
फिरि भूलि न अइसौ जाती हैं।
ई सालन ते हमका लूटिनि,
तौन्यो पर धरि गुर्राती हैं।
उइ जुलुम जुवानी बूढ़ौ हैं,
सब घर पर इनका सासनु है।
इनकी गुस्सा की चीन्हु लेहे,
घर का गवाहु हर बासनु है।।
उइ गुस्सा जेहि पर होती हैं,
मिनटन माँ लेती मूड़ काटि।।
इनका बेल्हराबु गजब का है,
हँसि कै लेती हैं जेबु काटि।।
है उनके पाछे पुलिस लागि,
सरकार मचावति हल्ला है।।
ई हमरे पाछे परी रहैं,
च्वारन का पकरे पल्ला है।।
सरकारी उनते जूझि रही,
हमहूँ हन इन ते परेसान।
घर इनका डेर उनका बाहेर,
हमरे नकुनन माँ भऐ प्रान।।
सरकार सूचना करौ नोट,
हम उनका बाँधि पकरि लइवै।
ई रोजु-रोजु की किट-किट ते,
हरिवे तौ फिरि जू दइ देबै।।

शुभकामनाओं सहित :

शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं० 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

प्रज्ञा चक्षु

तिलक शुक्ल
रायबरेली

वह कहाँ जा रही थी उसे खुद पता नहीं था। मस्तिष्क शून्य था। केवल कदम बढ़ते जा रहे थे। उसके कानों में फैमिली कोर्ट के जज के शब्द गूँज रहे थे – "कानूनी तौर पर किसी भी व्यक्ति को उसकी मर्ज़ी के खिलाफ बन्धन में नहीं रखा जा सकता है। चाहे वह दाम्पत्य बन्धन ही क्यों न हो। यह कोर्ट वादी की तलाक की अर्जी मंजूर करती है। श्रीमती सुन्दरी श्रीवास्तव यदि चाहें तो एलीमनी के लिये दरख्वास्त दे सकती है"।

न्याय कभी-कभी कठोर हो जाता है। जज के मुँह से निकले कुछ शब्दों ने वर्षों के अंतरंग सम्बन्धों एवं भावनाओं को एकदम नकार दिया।

उसके तलाक का केस काफी चर्चा में था। मीडिया ने भी जन मानस में उसके प्रति सहानुभूति की लहर पैदा कर दी थी। जगह-जगह पोस्टर लग गये थे "सुन्दरी के त्याग को देखते उसे तलाक देना मनुष्यता की हत्या है"। उसके वकील ने भी आश्वासन दिया था कि वह अपनी बहस में भावनात्मक पक्ष को उभारेगा और अन्तिम विजय उसी की होगी।

कोर्ट में उसके वकील ने कहा –

"मीलार्ड मैं श्रीमती सुन्दरी श्रीवास्तव के पक्ष में उन पहलुओं को पेश करना चाहूँगा जिनके चलते सुन्दरी की शादी हुई। मेरा दावा है कि अन्त में हुजूर ही नहीं बल्कि कोर्ट में उपस्थित सभी लोग मुतमइन हो जायेंगे कि इन परिस्थितियों में उनके पति का उनसे तलाक मांगना कितना नीच और घृणित कार्य है।

इनका नाम तो सुन्दरी है पर इनसे असुन्दर महिला परिवार में क्या आस पड़ोस में नहीं थी। घर के सभी लोग सुदर्शन थे। अतः बचपन से ही इसके साथ उपेक्षा का व्यवहार रहा। पढ़ने में ठीक थी। शिक्षक प्रशंसा करते। परन्तु viva में अच्छे अंक न मिलने से मेरिट में नहीं आती। उसके व्यवहार से सभी खुश थे परन्तु चेहरे की वजह से सब बिगड़ जाता। रिसेप्शनिस्ट के पद से अपने व्यवहार और कार्य कुशलता की वजह से उसे सेक्शन इन्चार्ज बना दिया गया (जिससे वह पब्लिक डीलिंग से दूर रहे)। वेतन अच्छा था। घर वाले उसका वेतन तो इस्तेमाल करते थे पर स्नेह और सम्मान देते वक्त चेहरा आड़े आ जाता। शादी के लिये बहुत लोग आये पर किसी ने पसन्द नहीं किया। उसके अच्छे वेतन के लोभ में

कुछ युवक शादी को मनुहाये पर आगे की जेनरेशन खराब होने के डर से पीछे हट गये। अन्त में रिश्ते भी आना बन्द हो गये। इन रिजेक्शन्स का उस पर कोई असर नहीं पड़ता क्योंकि अब उसकी आदत पड़ चुकी थी। परिवार वालों के तानों से तंग आकर उसने हास्टल में रहना शुरू किया। कुछ दिन तो आशा थी कि परिवार वाले उसे वापस ले जाने आयेंगे। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। शायद वह भी यही चाहते थे।

आफिस के कार्य के बाद इंगेज रहने के लिये उसने एक एन जी ओ ज्वाइन कर लिया जो विकलांगों के लिये काम करता था। विकलांगों की ही भलाई में क्यों....? शायद वह अपने को सूरत से विकलांग मानती थी और शायद इसीलिये उसे शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों से सहानुभूति थी। उसके विचार में सृष्टि बाधित लोग सबसे अधिक अक्षम और निरीह होते हैं। इसलिये धीरे-धीरे वह केवल "अन्धे".. नहीं! नहीं! "दृष्टिबाधित" लोगों के लिये काम करने लगी। हालांकि जिला विकलांग अधिकारी ने उसे बताया था कि दृष्टि बाधित लोगों के बीच कार्य करना सबसे मुश्किल है। परन्तु फिर भी वह उनके लिये कार्य करती गई।

एक बार कार्यशाला में उसने देखा कि जहां अन्य दृष्टि बाधित ऊधम कर रहे थे एक सुदर्शन युवक अलग कोने में बैठा ब्रेल लिपि का अभ्यास कर रहा था। गोर वर्ण उम्र लगभग २५ से ३० की, सम्भ्रान्त परिवार का लग रहा था। अपने कार्य के दौरान सुन्दरी की निगाह अनजाने में ही उसकी तरफ उठ जाती। काम खत्म होने के बाद वह उस युवक के पास गई और उसके बारे में पूछा। युवक ने बताया कि एक दुर्घटना में उसके परिवार के लोग खत्म हो गये। दुर्भाग्यवश केवल वही जीवित रहा। सुन्दरी ने पूछा जीवित रहने को दुर्भाग्य क्यों मानते हो ? युवक ने कहा "देवी जी हर प्रकार की विकलांगता से अन्धे होना बहुत बड़ी त्रासदी है। खासकर जब आप पहले दुनियां देख चुके हों।

सुन्दरी ने नाम पूछा। युवक ने कहा "प्रज्ञा चक्षु"। सुन्दरी को झटका लगा क्या शुरू से ही तुम्हारा नाम प्रज्ञा चक्षु था। युवक मुस्कराया - नहीं पर अब यही नाम उचित लगता है।

फिर भी तुम्हारा असली नाम क्या है ? सुन्दरी ने पूछा

वह नाम मैं भूल चुका हूँ। यह कह कर वह अपना सामान ले वहां से चला गया। सुन्दरी को लगा कि उसे यह बात आइन्दा से नहीं उठानी चाहिये।

अपने एन जी ओ ग्रुप के साथ लौटते में सब गपशप में मशगूल थे परन्तु सुन्दरी का मन बार बार उस सुदर्शन दृष्टि हीन युवक की ओर चला जाता।

अगले वीक एन्ड पर उसका एन जी ओ फिर उसी केन्द्र में गया। सभी सदस्य अपने कार्य में लग गये। एकाएक सुन्दरी ने देखा कि प्रज्ञा चक्षु उसी स्थान पर अकेला बैठा ब्रेल लिपि का अभ्यास कर रहा था। सुन्दरी उसके पास गई और पूछा कि इस लिपि के अभ्यास पर इतना ज़ोर क्यों ?

प्रज्ञा चक्षु "कौन"

मैं सुन्दरी श्रीवास्तव पिछली बार तुमसे मिली थी पर तुम नाराज़ हो गये थे।

वह चुप रहा

प्रज्ञा तुम ब्रेल लिपि सीख कर क्या करना चाहते हो

जीविका ढूंढूंगा। सारे जीवन यों खैरात की ज़िंदगी जीने का मेरा कोई इरादा नहीं है।

सुन्दरी को उसका यह स्वाभिमान अच्छा लगा।

इसके बाद वह अपना कार्य समाप्त कर घर लौट आई। इन्टरनेट पर सर्फ करते करते उसे उस युवक का ध्यान आया। दृष्टिहीन होने के बावजूद उसमें निरीहता नहीं थी।

स्वाभिमान मनुष्य को अधोगति से बचाता है।

एकाएक स्क्रीन पर उसने दृष्टि बाधित लोगों को आत्मनिर्भर बनाने वाली संस्था की वेब साइट देखी। यह संस्था देहरादून में थी। दृष्टिहीन लोगों को हास्टल में रख कर उन्हें उनके पसंद की जीविका के लिये ट्रेन करना व आत्मनिर्भर बनाना उसका लक्ष्य था। उसके बाद व्यक्ति अपने आप अपना भोजन व अन्य सभी कार्य करने में दक्ष हो सकता है। सुन्दरी ने सारी जानकारी नोटकर ली।

अगले दिन आफिस के पहले ही प्रज्ञा के पास पहुंच कर उसने प्रज्ञा को संस्थान के बारे में बताया।

प्रज्ञा ने निराशा से कहा कि इस पर खर्च भी तो आता होगा।

सुन्दरी के बताने पर कि वह व्यवस्था बिकुल निःशुल्क है उसके चेहरे पर क्षणिक खुशी दिखी पर अगले क्षण निराशा की बदली छा गई - लखनऊ से देहरादून का मार्ग व्यय...? मैं वहाँ पहुंचूंगा कैसे...?

'उसकी चिन्ता तुम मुझ पर छोड़ दो' सुन्दरी के मुंह से अचानक निकला।

'पर यह तो एहसान होगा'

सुन्दरी को उसे फौरन समझाते हुए झूठ बोलने में भी कोई हिचक नहीं हुई 'कोई एहसान नहीं। मैं अपने रिश्तेदार के यहां देहरादून जाने को बहुत दिन से

सोच रही थी। सोचा कि तुम्हारी परिचारिका बन कर जाने से मेरा टिकट बच जायेगा। तुम्हें पहुंचा कर कुछ दिनों के बाद वापस आ जाऊँगी'।

अगले ही दिन सुन्दरी ने देहरादून से प्रज्ञा के एडमीशन के बारे में सारी जानकारी ले ली। विकलांग कन्सेशन पर देहरादून के दो टिकट बुक करा दिये और प्रज्ञा को फोन पर जाने का दिन और समय बता दिया। एक रोज़ कार्यशाला जा कर प्रज्ञा को देहरादून ले जाने की स्वीकृति भी लेली।

ट्रेन में प्रज्ञा अन्यमनस्क था। कभी सोचता कि यह महिला मेरे लिये इतना क्यों कर रही है ? पर एक तरफ की फ्री यात्रा की बात सोच कर आश्वस्त हो जाता।

इधर सुन्दरी सोच रही थी कि उसे इस नव युवक के प्रति इतनी सहानुभूति क्यों ? .... दया ?, करुणा ?, या प्रभु इच्छा मान कर वह भी अपने मन को समझाने की कोशिश करती।

दोनों को ए सी थ्री टायर में नीचे की बर्थ मिली थी। गाड़ी चलने पर छुटपुट बातें होती रहीं। पर प्रज्ञा ज्यादातर चुप गम्भीर बना रहा। शायद भविष्य के बारे में अनुमान लगा रहा था। सुन्दरी उसकी प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रख रही थी और स्वयं को आश्वस्त कर रही थी कि वह मात्र परिचारिका है।

सुबह हुई। सुन्दरी का दिल बहलाने के लिये बाहर के दृश्य थे। प्रज्ञा केवल स्थिर बैठा था। कोई भी आवाज़ होने या वेंडर के आने पर केवल पथराई आंखें उधर घूम जातीं। सुन्दरी उसके सामने की सीट पर बैठी उसके चेहरे के भाव देख रही थी। गाड़ी रुकती तो उत्सुकता, एकाएक शोर से आक्रोश, और न जाने कितने भाव प्रज्ञा के चेहरे पर आ रहे थे। वह सोच रही थी कि यदि प्रज्ञा की आंखें देख सकती तो क्या वह इतनी सहजता से उसके चेहरे को देख सकती थी या प्रज्ञा किसी को अपने ओर देखते जान अपने चेहरे के भाव संयत करने की कोशिश करता या फिर महिला दृष्टि से संकुचित होता। पर ऐसा कुछ नहीं था।

देहरादून आने पर वह उसे सीधे संस्थान ले गई। वहां के इंचार्ज भी प्रज्ञा से प्रभावित हुये और तत्काल उसकी व्यवस्था कर दी। उन्होंने सुन्दरी से पूछा 'आप इनकी कौन लगती हैं? इस सवाल के लिये सुन्दरी तैयार नहीं थी। प्रज्ञा ने ही उत्तर दिया' यह एक एन जी ओ कार्यकर्त्री हैं और बहुत लगनशील हैं।

देहरादून से वापसी के सफर में बार-बार उसका ध्यान प्रज्ञा की ओर चला जाता। लगता अपने किसी निकटस्थ को छोड़कर आ रही है। इंचार्ज के प्रश्न पर वह असहज क्यों हो गई? यह उसे स्वयं समझ नहीं आ रहा था।

एक साल की ट्रेनिंग के बाद प्रज्ञा ट्रेन से अकेले ही लौटा। सुन्दरी स्टेशन पर

उसे रिसीव करने गई। एकाएक प्रज्ञा को देख कर वह पहचान नहीं पाई। आत्मविश्वास से परिपूर्ण सुदर्शन व्यक्तित्व, आँखों पर चश्मा बहुत फब रहा था। केवल हाथ की स्टिक ही उसके दृष्टिहीन होने की चुगली कर रही थी। सुन्दरी ने लपक के प्रज्ञा का स्वागत किया 'लखनऊ नगरी में स्वागत है प्रज्ञा'।

प्रज्ञा बोला 'अरे सुन्दरी जी मेरा आना आपको कैसे पता चला'

सुन्दरी के मुंह से अचानक निकला 'उन पे बन आये कुछ ऐसी कि बिन आये न बने'

प्रज्ञा के माथे पर शिकन आई ही थी कि वह संयत हो कर बोली 'संस्थान के अधीक्षक' ने फोन किया था।

प्रज्ञा मुस्कराने लगा।

साल भर देहरादून संस्थान में काम करने के एवज़ में उसे कुछ धन मिला था जिससे प्रज्ञा ने एक इन्टरएक्टिव साफ्टवेयर वाला लैपटाप किश्तों में खरीद लिया। सुन्दरी ने एक साफ्टवेयर कम्पनी में नौकरी दिला दी। अब वह एक अलग कमरे में स्वतंत्र रूप से रहने लगा। कम्पनी की स्टाफ बस उसे कम्पनी तक ले जाती और वापस छोड़ जाती।

प्रज्ञा ने तीन साल के वकालत के पार्ट टाइम कोर्स में दाखिला भी ले लिया।

सुन्दरी का प्रज्ञा से मिलना लगभग रोज़ ही होता था। कभी वह प्रज्ञा को अपने कमरे पर ले जाकर खाना खिलाती और कभी प्रज्ञा उसे अपने कमरे पर स्वयं खाना बना कर खिलाता। जब वह तरतीब से सजे कमरे में कुशलता से खाना बनाता तो सुन्दरी आश्चर्य से उसे निहारती रहती।

एक रोज़ खाते वख्त सुन्दरी ने पूछा कि अब आगे क्या इरादा है। प्रज्ञा ने कहा वकालत करने का। सुन्दरी कहा अरे मैं शादी के बारे में पूछ रही थी।

प्रज्ञा ने कहा हाँ यदि कोई मेरी मेरी तरह दृष्टि बाधित लड़की मिल जाय तो सम्भव है।

सुन्दरी, ''दृष्टि बाधित ही क्यों, ऐसी क्यों नहीं जो तुम्हारी आँख बन सके।''

प्रज्ञा ने कहा आँख वाली कौन लड़की मुझसे शादी करेगी। क्या तुम किसी को जानती हो। उसके स्वर में विनोद था।

सुन्दरी के मुंह से अचानक निकला मैं नहीं तुम भी जानते हो पर मानते नहीं।

प्रज्ञा गंभीर हो गया बोला यह मज़ाक का विषय नहीं है।

सुन्दरी हंसते हुए बोली मैं मज़ाक नहीं कर रही हूँ। लड़की तुम्हारे सामने है बुद्धू।

प्रज्ञा स्तब्ध हो गया। फिर अविश्वास से फुसफुसाया क्या तुम सही कह रही हो

सुन्दरी हाँ!

सुन्दरी और प्रज्ञा ने रजिस्ट्रार के सामने दस्तखत किये। कार्यशाला अधीक्षक ने गवाही पर दस्तखत कर के नव दम्पति को शुभ कामनायें दीं। विवाह भोज कार्यशाला में सभी दृष्टि बाधित साथी व अधीक्षक के साथ करने के बाद नव दम्पति प्रज्ञा के कमरे पर आ गये।

शादी के बाद रसोई और लांड्री का सारा भार सुन्दरी स्वयं उठाना चाहती थी क्योंकि यह स्त्रियोचित कार्य हैं। प्रज्ञा का कहना था कि तुम मेरी पूरक हो। मैं तुम्हारी नज़र से देखता हूँ यही बहुत है।

सारा गृह कार्य हम दोनों मिल कर करेंगे जिससे मेरा स्वावलम्बन न छूटे और तुम्हें मेरी अन्य सहायता के लिये अधिक समय मिले। सुबह का सारा कार्य सुन्दरी करती जबकि प्रज्ञा शारीरिक व्यायाम और वकालत की तैयारी में लगाता। जितना मैटीरियल ब्रेल लिपि में मिल पाता वह तो प्रज्ञा के लिये आसान था बाकी नोट्स व किताबें सुन्दरी उसे पढ़ कर सुन देती। प्रज्ञा ब्रेल में आवश्यक नोट्स लेता जाता। उसकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी। जब ला का पहला साल प्रज्ञा ने पास किया तो दम्पति को अपार हर्ष हुआ। प्रज्ञा ने सुन्दरी को क्रेडिट दिया तो सुन्दरी ने उसका हौसला बढ़ाया। दोनों ने पांच साल बच्चा न पैदा करना तय किया। इससे प्रज्ञा की पढ़ाई पूरी हो जाये और तब तक आर्थिक स्थिति मज़बूत हो सकेगी।

वकालत पास करने के बाद जब प्रज्ञा रजिस्ट्रेशन के लिये हाई कोर्ट पहुंचा तो सुन्दरी उसके साथ थी। कोर्ट में नज़ारा अलग ही था। सभी दृष्टिहीन वकील को देखना चाहते थे। लौटते समय तो मीडिया भी पहुंच गया। अगले दिन इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया में दम्पति की चर्चा थी। दोनों की फोटो भी छपी। फोटो में सुन्दरी तो बहुत खुश दिखी पर प्रज्ञा अन्यमनस्क दिख रहा था। एचीवमेंट तो प्रज्ञा का था पर उसे यहां तक पहुंचाने में मीडिया ने सुन्दरी को ही साधुवाद दिया। दोनों के जीवन में सुन्दरी ही नायिका थी। प्रज्ञा मात्र सहायक पात्र ही बन कर रह गया। शायद इसीलिये वह अन्यमनस्क था।

दोनों का पारिवारिक जीवन शांत और सुखमय था। एक रोज़ सुन्दरी ने पूछा "शादी के समय तुमने यह नहीं सोचा कि मैं कैसी दिखती हूँ।

प्रज्ञा "मेरे लिये तो तुम सृष्टि की सबसे सुन्दर रचना हो"

सुन्दरी ने यह शब्द पहले कभी नहीं सुने थे। ऐसे शब्द सुनने के लिये वह वर्षों से तड़प रहीं थी। वह अंदर तक भीग गई। तृप्त हो गई। उसने प्रभु को धन्यवाद दिया। इससे ज्यादा उसे कुछ नहीं चाहिये।

एक दिन उसने प्रज्ञा से पूछा कि क्या तुम फिर से देखना चाहते हो।

प्रज्ञा "अन्धे को क्या चाहिये दो आँखे। पर मैं तो एक से ही काम चला लूंगा"।

सुन्दरी ने कहा हम लोग ज़िंदगी में आधा आधा बांटते हैं। तो क्यों न मैं अपनी एक आँख तुम्हें दे दूँ"

प्रज्ञा नाराज़ होते बोला "ऐसी बात दोबारा मत करना। तुम इतना सब जो मेरे लिये कर चुकी हो वही मेरे लिये काफी है। मैं तुम्हारे साथ अपने को असमर्थ नहीं मानता"

सुन्दरी कुछ नहीं बोली पर मन ही मन उसने कुछ निश्चय कर लिया

कुछ दिन बाद वह प्रज्ञा को लेकर आंख के डाक्टर के पास ले गई। डा० ने प्रज्ञा को कार्निया ट्रांसप्लांट के लिये एनरोल कर लिया और बताया कि मरते समय जो अपनी आंख दान कर देते है। उन्हीं से लोगों में प्रत्यारोपण किया जाता है। जब आपका नम्बर आयेगा तो आपको सूचित किया जायेगा। तब तक आप पैसों का प्रबन्ध कर लें। दोनों घर लौट आये। जिंदगी फिर गुज़रने लगी। दोनों महीने में एक बार दृष्टिबाधित स्कूल अवश्य जाते थे और भोजन वहीं सबके साथ करते। भोज प्रज्ञा और सुन्दरी की तरफ से प्रायोजित होता था। कार्यशाला के अधीक्षक भी उन दोनों के परिवार के वरिष्ठ सदस्य बन गये थे।

एक रोज़ सुन्दरी बहुत सवेरे ही जग गई। उसके मन में एक संकल्प था। सुबह के कार्यकलाप में सुन्दरी चुप सी रही। प्रज्ञा ने भी नोटिस किया। यदि देख सकता तो अनुमान लगा लेता कि सुन्दरी ने कुछ बड़ा निश्चय कर लिया।

सुन्दरी उस दिन काम पर न जा कर सीधे आंख के डाक्टर के पास गई और बोली "मैं अपनी एक आंख अपने अंधे पति को देना चाहती हूँ"। डा० हैरान हुआ। उसने कहा ऐसा नहीं हो सकता। सुन्दरी ने डाक्टर की टेबल पर रखे पेन नाइफ की नोक अपनी बांई आंख के सामने रख कर बोली यदि मैं स्वयं अपनी अपनी आंख

निकाल कर आपको दूं तो डाक्टर उसके हाथ से पेपर नाइफ लेने को उद्यत हुआ परन्तु सुन्दरी की वर्जना से उसको बैठना पडा। थोड़ी देर बात भराईये गले से बोला ठीक है मैं कुछ सोचता हूं।

अस्पताल के दो आपरेशन थियेटर में अलग अलग दो आपरेशन चल रहे थे। एक में सुन्दरी की आंख से कार्निया लेकर दूसरे थियेटर में प्रज्ञा की आंख में ट्रांसप्लांट किया जा रहा था। तय था कि कार्निया देने के बाद सुन्दरी की आंख नष्ट हो जायेगी। पर वह यह सोच कर प्रसन्न थी कि अब प्रज्ञा फिर से देख सकेगा। उसने डाक्टर को मना कर दिया था कि प्रज्ञा को पता न चले कि कार्निया का डोनर कौन है।

आज का दिन का दोनों के लिये बहुत महत्वपूर्ण था। आज प्रज्ञा की आंख की पट्टी खुलने वाली थी।

प्रज्ञा ने जब आंख खोली चारों ओर अन्धकार था। प्रज्ञा सिहर उठा... क्या उसकी आंख की रोशनी नहीं आई। डा० ने उसकी सिहरन महसूस कर प्रज्ञा से कहा डरो नहीं पूर्ण अन्धकार है। रोशनी धीरे-धीरे बढ़ाई जायेगी। बढ़ती रोशनी प्रज्ञा महसूस कर रहा था। पूर्ण प्रकाश होने पर प्रज्ञा सब कुछ देख सकता था। वह यकीन नहीं कर पा रहा था। डा० का हाथ पकड़ कर उसने कृतज्ञता ज्ञापित की और चारों कुछ ढूंढते हुये बोला डा० मेरी पत्नी कहां है।

डा० तुम पहले देखने के अभ्यस्त हो लो फिर पत्नी से मिलना। वह दूसरे कमरे में तुम्हारी प्रतीक्षा कर कही है।

डा० जान रहा था कि सबसे त्रासद घड़ी आने वाली है।

प्रज्ञा ने सुन्दरी के कमरे का दरवाजा खोला। सुन्दरी खिड़की से बाहर देख रही थी। उसकी पीठ प्रज्ञा की ओर थी। प्रज्ञा ने अनुमान लगाया कि सम्भवतः वह स्त्री सुन्दरी ही है। वह उसे देख तो सकेगा पर पहचानेगा तब ही जब वह बोलेगी।

प्रज्ञा ने पूछा "क्या तुम ही मेरी पत्नी सुन्दरी हो"।

सुन्दरी ने उसकी तरफ पीठ किये ही कहा "हां। प्रज्ञा क्या तुम भली प्रकार से देख सकते हो।

"हां बिल्कुल साफ और मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि यह सब सिर्फ तुम्हारी वजह से सम्भव हो सका। प्लीज़ तुम मेरी ओर घूमो मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ।"

प्रज्ञा के पीछे कार्यशाला के अधीक्षक थे। वह भी इस क्षण के बारे में चिन्तित थे। उन्होंने प्रज्ञा के कंधे पर हाथ रख लिया।

सुन्दरी धीरे से प्रज्ञा की ओर मुड़ी "प्रज्ञा मैं ही तुम्हारी पत्नी सुन्दरी हूँ"

अधीक्षक अवाक रह गये। सुन्दरी की बाई आंख नहीं थी। केवल खाली अक्षि कोटर था। उन्हें समझने में देरी नहीं लगी। तभी प्रज्ञा के गले से अजीब सी आवाज़ निकली। उसका सारा शरीर काँप रहा था।

सुन्दरी ने देखा प्रज्ञा के चेहरे का दाहिना हिस्सा उसकी तरफ था। उसकी दाहिनी आंख ठीक हो गई थी। दाहिनी प्रोफाइल में प्रज्ञा सामान्य लग रहा था। प्रज्ञा सुदर्शन तो पहले से ही था पर आज आंख ठीक होने से आज बहुत आकर्षक लग रहा था। उसकी प्रसन्नता उसकी मुस्कुराहट में दिख रही थी। परन्तु एकाएक उसका बिगड़ता चेहरा व कांपते शरीर को देख कर सुन्दरी सकते में आ गई।

प्रज्ञा ने कुर्सी का सहारा लिया और भर्राई आवाज़ में कहा क्या यही सुन्दरी है। इसकी तो एक आंख भी खराब है।

अधीक्षक ने कहा "सुन्दरी ने ही तुम्हें अपनी एक आंख दी है जिससे आज तुम उसे देख रहे हो।

प्रज्ञा और सुन्दरी दोनों ही शाक से खड़े नहीं रह सके। बैठ गये। सुन्दरी हतप्रभ थी कि आई डोनेशन की बात प्रज्ञा को क्यों कर पता लगी और प्रज्ञा मिली हुई आंख जैसे कोई भयानक सपना देख रहा था। उसे झुरझुरी हो रही थी कि वह इतनी बदसूरत महिला के साथ ५ साल कैसे रहा। एक आंख न होने की वजह से वह और भी वीभत्स दिख रही थी। उफ... क्या अब सारी ज़िन्दगी इसी के साथ रहना होगा.... नहीं कदापि नहीं। अन्धे होने की वजह से ५ साल तो गुज़र गये। अब और नहीं....

मगर आज वह सुन्दरी की आँख से ही देख रहा है। आजतक वह जो कुछ भी कर सका उसमें सुन्दरी का बहुत योगदान रहा है। वरना वह अभी तक कार्यशाला में ही पड़ा रहता या सड़क पर भीख मांग रहा होता। क्षण भर के लिये उसके दिल में कृतज्ञता का एहसास आया पर अगले ही पल सुन्दरी का बदसूरत और काना चेहरा सामने आने पर उसका मन कठोर हो गया। वह चुपचाप उठ कर बाहर चला गया। हफ्ते भर के अन्दर ही उसने फैमिली कोर्ट में तलाक का मुकदमा दर्ज करा दिया। उसने खुद ही यह मुकदमा लड़ने का मन बना लिया।

सुन्दरी अपमान और तिरिस्कार की जिन्दगी जीते जीते अब निराश हो गई थी। वह चलती ही गई। एकाएक उसे पैरों तले गीली मिट्टी का भान हुआ। झटके से वह होश में आ गई। सामने गोमती नदी पूरे वेग से बह रही थी। तो क्या वह आत्महत्या करने जा रही थी...। क्यों नहीं अब इसकी ज़िंदगी में बचा ही क्या था।

रूप तो भगवान ने ही नहीं दिया। भावनाओं में बह कर उसने एक आंख ऊपर से गवां दी। कल अखबारों में छपेगा कि इतना करने के बाद भी उसे तलाक दे दिया गया...। अब और अभिशप्त ज़िंदगी वह नहीं जीना चाहती। प्रज्ञा चक्षु के साथ बिताये ५ सालों के अलावा उसे कभी सुकून नहीं मिला।

..... प्रज्ञा चक्षु के साथ गुज़रे ५ वर्ष कितने सुखद रहे। कितनी खुश थी वह। उसके चेहरे पर अजीब उल्लास और चमक थी ऐसा लोग कहने लगे थे। एकाएक सुन्दरी ने सोचा ... क्या इन ५ खूबसूरत सालों की याद यादों के सहारे वह बाकी जीवन नहीं गुज़ार सकती। महिलायें वैधव्य भी तो झेलती हैं। वह सभी आत्महत्या तो नहीं करती। फिर उसके पास तो सामाजिक पहचान है। वह दृष्टिबाधित संस्था की चेयरपर्सन थी। उससे दृष्टिबाधितों को बहुत आशायें थी। वह प्रयास कर रही थी कि देहरादून ऐसा संस्थान लखनऊ में भी हो जाये। शासन से भी यह प्रस्ताव लगभग अनुमोदित हो गया था। केवल वित्तीय स्वीकृति मिली बाकी थी। नहीं-नहीं... सुन्दरी को अभी और कार्य करना है जिसके लिये उसका जीवित रहना अनिवार्य है वह आत्महत्या नहीं करेगी।

उसके मन से निराशा का कुहासा छट चुका था। उसमें आत्मविश्वास अंकुरित हुआ। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। गोमती के जल से आचमन किया और वापस मुड़ गई। एकाएक उसके पेट के निचले हिस्से में कुछ हलचल हुई। वह होम साइंस की छात्रा थी। तो क्या... उसके अन्दर कोई और जान पल रही थी। मुकदमें के चार महीनों में उसे अपनी शारीरिक स्थिति का भी भान नहीं रहा...। सुन्दरी को लगा जैसे नन्हें भ्रूण ने उसे इस निर्णय पर बधाई दी। सुन्दरी ने सोचा कि उसने एक आंख खो कर भी बहुत कुछ पाया। पर प्रज्ञा... उसे दृष्टि तो मिली पर वह न तो प्रज्ञा ही रह पाया न ही "प्रज्ञा चक्षु"।

वापस लौटते में फैमिली कोर्ट के सामने से सुन्दरी गुज़री तो देखा प्रज्ञा काला चश्मा लगाये रिक्शे पर बैठ रहा था। सुन्दरी उसके पास रुकी और उसका काला चश्मा हटाते हुए बोली "प्रज्ञा अब तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं रह गई। पहला ही केस तुमने जीत लिया। मुबारक हो"। प्रज्ञा कुछ नहीं बोला। सुन्दरी की आंख से ही सुन्दरी को देखता रहा।

सुन्दरी जब आगे बढ़ी तो उसकी चाल में दृढ़ता और होठों पर मुस्कान थी।

भारत के राष्ट्रपति के चुनाव

जुलाई २५, २०१२ को भारत के चौदहवें निर्वाचित राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी को सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति कापड़िया ने दिलाई थी। राष्ट्रपति के चुनाव भारत में अप्रत्यक्ष प्रणाली से होते हैं। संविधान के अनुच्छेद ५४ और ५५ में हैं। राष्ट्रपति के चुनाव की विस्तृत प्रक्रिया है। संसद के दोनों सदनों के सदस्य (मनोनीत सदस्यों को छोड़कर) तथा राज्यों की सभी विधान सभाओं के सदस्य राष्ट्रपति के निर्वाचक गण **(Electoral College)** का निर्माण करते हैं। लोकसभा के दो मनोनीत एंग्लो-इन्डियन तथा राज्य सभा के बारह मनोनीत सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करते हैं। अतः उन्हें राष्ट्रपति के चुनाव में मतदान का अधिकार नहीं है। उपराष्ट्रपति के चुनाव में मनोनीत सदस्य अपने मत का प्रयोग कर सकते हैं।

राष्ट्रपति के पद के लिये प्रत्याशी की आयु पैंतीस वर्ष से कम नहीं होनी चाहिये। भारत का नागरिक होना उसकी प्रथम आवश्यकता है। इन दोनों के अतिरिक्त ऐसे प्रत्याशी में वह सभी अर्हतायें होनी चाहिये जो लोक-सभा के सदस्य के लिये वांछनीय है। यह भी प्रतिबन्ध है कि राष्ट्रपति के पद का उम्मीदवार किसी सरकारी या गैर-सरकारी संस्था, जो सरकार के नियंत्रण हो, पर किसी लाभ के पद पर नहीं होगा। इसमें उपराष्ट्रपति, राज्यपाल केन्द्र या राज्य के मंत्री के पद अपवाद हैं। लेकिन श्री प्रणव मुखर्जी ने उम्मीदवारी के साथ मंत्रिमण्डल त्याग पत्र दे दिया था।

राष्ट्रपति के पद की निर्वाचन पद्धति अनुच्छेद ५५ में वर्णित आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा होती है। इस विधि से संसद और विधान सभा सदस्यों के मतों एकरूपता और समतुल्यता प्राप्त कराने का प्रयास होता है। इस का आधार पिछली दस वर्षीय जनसंख्या का आधार, विधान सभा सदस्यों की संख्या और सांसदों के मत का मूल्यांक निर्धारित किया जाता है। उदाहरण के लिये किसी बड़े राज्य की पिछली जनगणना की जनसंख्या ५,००,००,००० पांच करोड़ है और विधान सभा सदस्यों की संख्या २५० तो

(१) प्रतिनिधित्व क्षमता $\frac{5,00,00,000}{250 \times 1000} = 200$ (बड़ा राज्य)

(२) जनसंख्या - दस लाख और विधायक ३०

$$\therefore \frac{10,00,000}{30 \times 1000} = 33.3 = 33 \text{ (छोटा राज्य)}$$

पहले उदाहरण के अनुसार विधान सभा सदस्य की प्रतिनिधित्व क्षमता २०० और दूसरे उदाहरण से प्रतिनिधित्व क्षमता ३३ होगी इसी प्रकार सभी २८ राज्यों की जनसंख्या के आधार दर प्रतिनिधित्व क्षमता को जोड़कर कुल योग निरा सा जाता है। उसे संसद के ७७६ सदस्यों (५४३+२३३) में बराबर बांट दिया जाता है।

$$= \frac{\text{विधान सभा मण्डल मूल्यांक}}{776} = \text{सांसद मूल्यांक}$$

निर्वाचन आयोग संविधान एवं राष्ट्रपतीय एवं उपराष्ट्रपतीय निर्वाचन अधिनियम १९५२ के अनुसार राष्ट्रपति के पदावसान के दो माह पहले प्रारम्भ कर देते हैं। मृत्यु या पद त्याग की स्थिति में ऐसी रिक्ति को यथाशीघ्र भरे जाने की व्यवस्था है। नाम निर्देशन की अन्तिम तारीख निर्वाचन की अधिसूचना के चौदहवें दिन होती है। नाम निर्देशन पत्रों की जांच दूसरे दिन और अभ्यर्थिता वापस लेने के लिये जांच बाद दूसरे दिन की होती हे। मतदान उम्मीदवारी वापस लेने के पन्द्रह दिन होती है।

राष्ट्रपति के चुनाव में निर्वाचन अधिकारी सामान्यतया महासचिव राज्य सभा या लोकसभा में से नियुक्त होता है और उनके साथ सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किये जाते हैं।

राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिये पहले दस प्रस्तावकों और दस समर्थकों के हस्ताक्षर आवश्यक थे। यह संसद या किसी भी विधान सभा से हो सकते हैं। पूर्व में बहुत-से नामांकन पत्र भर दिये जाते थे। अब राष्ट्रपति के लिये पचास प्रस्तावक और पचास समर्थक की संख्या निर्धारित है और उप राष्ट्रपति के लिये बीस-बीस सांसदों की।

राष्ट्रपति के चुनाव में मतदाताओं को चिन्ह के स्थान पर प्रत्येक उम्मीदवार के आगे १, २ या ३ जैसी संख्या लिखनी होती है। यह विधान सभा और संसद के चुनाव से भिन्न है।

समस्त मत पेटियाँ मतदान के बाद राज्यों की विधान सभा से दिल्ली में संसद के सुरक्षित कक्ष में रखी जाती है और फिर राज्यों के मतों तथा संसद के मतों की गणना की जाती है। **निर्वाचित अभ्यर्थी की घोषणा :** राज्यों के मतों का मूल्यांक + संसद के मतों का मूल्यांक 2+1 = अर्थात कुल मूल्यांक के ५० प्रतिशत + 1 मत या इससे अधिक मत प्राप्त होने पर किया जाता है। यदि प्रथम (१) मतों के आधार पर यह निर्णय नहीं निकलता है, तो दूसरे चक्र की गणना अर्थात् सबसे कम मत प्राप्त करने वाले उम्मीदवार के मत पत्रों की "द्वितीय" मत को जोड़ा जाता है और पचास प्रतिशत से अधिक होने पर निर्णय घोषित कर दिया जाता है कि 'अमुक' व्यक्ति राष्ट्रपति पद के लिये निर्वाचित घोषित किया जाता है। अभी तक दूसरे चक्र की गणना केवल एक बार अगस्त १९६९ के राष्ट्रपति चुनाव, जिसमें श्री वाराह गिरि वेंकटगिरि और श्री नीलम संजीव रेड्डी उम्मीदवार थे।

राष्ट्रपति का कार्यकाल शपथ लेने के दिन से पाँच वर्ष या उत्तराधिकारी चुन जाने तक होता है। राष्ट्रपति, लोकसभा और राज्यसभा के साथ संसद का अभिन्न अंग है और विधेयक राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बिना अधिनियम का स्वरूप नहीं ले सकता है। राष्ट्रपति संसद के सदनों को आहूत करते हैं। संसद को संदेश भेज सकते हैं। प्रत्येक वर्ष के पहले सत्र को संयुक्त रूप से सम्बोधन करते हैं। संसद के सत्रावसान के समय आवश्यक विषयों पर अध्यादेश जारी कर सकते हैं। संसद में वित्तीय प्रकरण राष्ट्रपति की पूर्वानुमति के बाद ही प्रस्तुत हो सकते हैं। राष्ट्रपति भारत के संविधान और देश के सर्वोच्च संरक्षक हैं।

रमेश चन्द्र त्रिपाठी
A-1055, इन्दिरा नगर
लखनऊ-226 016

कान्यकुब्ज वाणी आभा मंडल

(जनवरी २०१३ तक संशोधित)

संरक्षक

न्यायमूर्ति पं. डी.के. त्रिवेदी — अनुदान रु. १०००० दस हजार मात्र

वाणीपुत्र — अनुदान रु. ५००० पांच हजार मात्र

१. डा. यू.डी. शुक्ल

२. डा. वी.के. मिश्रा आई सर्जन

३. इं. एस.एन. मिश्रा

विशिष्ठ सदस्य — अनुदान रु. २००० दो हजार मात्र

१. श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी	२. श्री उपेन्द्र मिश्र
३. डा. आर.एस. बाजपेयी	४. प्रो. डा. पी.पी. त्रिपाठी
५. डा. आर. के. मिश्रा	६. श्री प्रमोद शंकर शुक्ल, रायबरेली
७. श्री विनोद बिहारी दीक्षित	८. श्री विजय शंकर शुक्ल

आजीवन सदस्य — अनुदान रु. १००० एक हजार मात्र

१. श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी	२. श्री भारतेन्दु त्रिवेदी, सीतापुर
३. श्री रमा रमण त्रिवेदी, सीतापुर	४. श्री के.के. त्रिवेदी
५. श्री आर.सी. त्रिपाठी	६. श्री नवीन कुमार शुक्ल
७. श्रीमती मीनू द्विवेदी, कानपुर	८. डा. आर. के. त्रिपाठी
६. इं. बसंत राम दीक्षित	१०. श्री सुधर कुमार पांडे
११. श्रीमती मनोरमा तिवारी	१२. कु. प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
१३. श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, सीतापुर	१४. श्री यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली
१५. श्री राम चन्द्र अवस्थी, मुम्बई	१६. ब्रिगेडियर शीतान्शु मिश्र
१७. श्री कृपा शंकर दीक्षित	१८. डा. अनुराग तिवारी, कानपुर
१६. श्री आर. के. शुक्ल	२०. डा. आर.सी. मिश्र
२१. श्रीमती रोली तिवारी, रायबरेली	२२. श्री विनोद कुमार मिश्र, उन्नाव
२३. राज किशोर अवस्थी	२४. डा. पी.एन. अवस्थी
२५. नीरज त्रिपाठी, हरिद्वार	२६. कौशल किशोर शुक्ल
२७. विनय कुमार शुक्ल, रूरा	२८. मनी कान्त अवस्थी
२६. के.बी. शुक्ल	३०. हेमा दिनेश मिश्रा
३१. अशोक कुमार तिवारी, जबलपुर	३२. ब्रह्म शक्ति दीक्षित
३३. श्रीमती सुमन शुक्ला	३४. शम्भू प्रसाद पान्डे, मलिहाबाद

३५. श्रीमती अनुराधा शुक्ल, पत्नी-पं.त्रयम्बकेश्वर प्रसाद शुक्ल, रायबरेली

कान्यकुब्ज कार्यकारिणी

अध्यक्ष

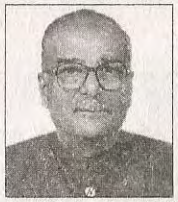

न्यायमूर्ति डी०के० त्रिवेदी

उपाध्यक्ष

पी०एन० मिश्रा
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

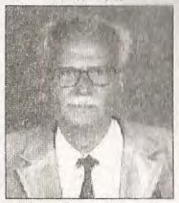

जे० के० त्रिपाठी
संस्कृत मातृ भाषी

महासचिव

उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

सचिव महिला प्रकोष्ठ

कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष

ए० के० त्रिपाठी
एडवोकेट

उप मंत्री

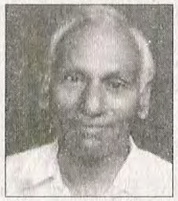

के० एस० दीक्षित
आडीटर

सदस्य

जी० एस० मिश्र
स्थायी अधिवक्ता

सदस्य

डा० आर०के०मिश्रा
आर्थो सर्जन

सदस्य

हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

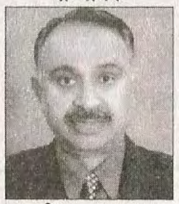

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सह-सम्पादक

एस० एन० दीक्षित
इंजी० लेसा

सह-सम्पादक

डा० अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

नवसंवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत
मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :
जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर
उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : 9336666322, 0522-6568011

पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

वीरकवि पं० कृष्ण शंकर शुक्ल 'कृष्ण' की अमरकृति 'बेनी माधव बावनी'

स्व० कृष्ण शंकर शुक्ल

रायबरेली नगर के पश्चिमी भाग में मोहल्ला सुरजूपुर स्थित है। यहाँ पं० वंशगोपाल शुक्ल, प्रतिष्ठित वकील एवं जमींदार निवास करते थे। उनके तीन पुत्र थे, राय साहब पं० गया प्रसाद शुक्ल, वकील एवं चेयरमैन म्युनिसिपल बोर्ड, पं० द्वारका प्रसाद शुक्ल 'शंकर' जिला जज तथा साहित्य भूषण पं० रामावतार शुक्ल 'चातुर'। नगर के साहित्यिक एवं ब्राह्मण समाज के कार्यकलापों का यह परिवार प्रमुख आकर्षण केन्द्र था।

पं० रामावतार शुक्ल 'चातुर' की अध्यक्षता में 'चातुर मण्डल' नाम से कवियों के संगठन की स्थापना सन् १६३८ में हुई थी। यह रायबरेली जनपद एवं अवध क्षेत्र का प्रमुख कवि-मण्डल था। कविता के प्रचार-प्रसार में अपने समय में इसका विशेष योगदान था। 'चातुर मण्डल' के सदस्यों में कविरत्न 'ब्रजनन्दन', आशुकवि 'मोहन', महाकवि 'गिरीश' हास्यकवि 'मस्तराम' तथा कौतुक एवं आधुनिक रसखान 'रशीद', 'चन्द्रमणि' विशेष लोकप्रिय थे। संस्था द्वारा नवोदित कवियों को सतत् प्रेरणा एवं प्रोत्साहन सुलभ रहा। 'चातुर' जी के परिवार में वृद्ध माताओं से लेकर कुलप्रसूता कन्यायें भी कवयित्री थीं, मुख्तार से लेकर जिलेदार एवं सिपाही तक कविता के उपासक थे।

'चातुर' जी के ज्येष्ठ पुत्र पं० कृष्ण शंकर शुक्ल 'कृष्ण' थे, जिन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी राना बेनीमाधव सिंह की प्रशस्ति में 'बेनी माधव बावनी' की रचना की। 'कृष्ण' कवि का जन्म २६ सितम्बर १६१५ ई० को हुआ था। बचपन में ही काव्य रुचि के अंकुर इनमें प्रकट होने लगे थे। किसी के मुख से छन्द सुनकर अन्तिम अंश के जोड़ का प्रास स्वयं कहने लगते थे। इनका असमय निधन परिवार पर बज्रपात सरीखा था। ६ नवम्बर १६३७ को २१ वर्ष की अल्पायु में जब स्वर्गवासी हुए, यह दसवीं कक्षा के छात्र थे।

कवि 'कृष्ण' ने अपना परिचय एक छन्द द्वारा दिया था वह निम्नलिखित है -

ग्राम सुरजूपुर जिला खास है 'बरेलीराय'
ताको मैं निवासी जगदम्ब गुन गाता हूँ।
नाम 'कृष्ण शंकर' कवित्त में धरत 'कृष्ण'

अम्ब की कृपा से काव्यकोष का विधाता हूँ।
'चातुर' सुवन औ' भतीजा कवि 'शंकर' का,
शिष्य 'भगवान' मित्र 'मस्त' का बताता हूँ।
नाती वंशगोपाल का पनाती रामेश्वर जू का,
बाबा शिवदीन का छनाती कहलाता हूँ।।

छन्द के अन्तिम चरण में नाती, पनाती, छनाती शब्दों का प्रयोग हुआ है, उन्हें क्रमशः पौत्र, प्रपौत्र, परिपौत्र के अर्थ में समझा जाना परिचयदाता का अभीष्ट था।

काव्य-सृजन के अतिरिक्त इन्हें व्यायाम एवं कुश्ती का भी शौक था। इनके आवासीय परिसर में 'अखाड़ा' भी था, जहाँ अभ्यास के लिए मोहल्ला के नवयुवक एकत्रित होते थे। अभ्यास के अनन्तर उन्हें अंकुरित भीगे चने खाने को दिए जाते थे।

कवि कृष्ण के प्रसंग में एक विशेष घटना उल्लेखनीय है। सन् १६३५ में लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित कांग्रेस के विराट कवि सम्मेलन में 'कृष्ण' ने अपनी ओजस्वी रचना सुनायी थी। पढ़ने का ढंग तो ऐसा था कि श्रोताओं में वीर रस उमड़ आता था। रचना सुनने के बाद यूँ ही बैठक थी। कविवर 'सनेही' जी, 'शंकर' जी, 'चातुर' जी, कृष्ण जी, अन्य कवियों समेत बैठे थे। इस समय डा० 'रसाल' जी ने कृष्ण की प्रशंसा करते हुए 'शंकर' जी और 'चातुर' जी ने कहा था - आप धन्य हैं जो इस तरह के रत्न पा रहे हैं। उसी क्रम में उनके मुख से अचानक छन्द का यह अंश निकल पड़ा - 'मूल हू से ब्याज भारी है'।

इतनी कम आयु में 'बेनी माधव बावनी' जैसी ओजस्वी लोकप्रिय अमरकृति की रचना काव्य प्रतिभा के प्राकट्य की अनूठी घटना है, जिसकी तत्कालीन हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य मनीषियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी और तरुण कवि के असमय निधन पर शोक प्रकट करते हुए सम्वेदनायें व्यक्त की थीं। कतिपय विद्वानों की सम्मतियों के अंश जानकारी के लिए तथा कृति और कृतिकार के महत्व को प्रकाश में लाने के लिए उद्घृत किया जा रहा है।

आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी-

'हिन्दी में भूषण कृत 'शिवा बावनी' के टक्कर की यही एक पुस्तक मेरे देखने में आई। काल का कराल आक्रमण उन पर अभी न होता, तो वे, यथासमय

महाकवि की पदवी के अवश्य ही अधिकारी होते।

कवि सम्राट् पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' -

'एक नवयुवक की यह आदरणीय रचना है। वीर रस की इसमें ऐसी पुट है कि पढ़ते ही तबियत फड़क उठती है।

महाकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त

'अभी तो वह विकासोन्मुख ही थे, तो भी उनकी रचनायें एक प्रौढ़ि हैं। बावनी के अनेक छन्द इसके प्रमाण हैं। अपनी कविता के लिए विषय चुनने में भी उन्होंने साहस दिखाया।'

समालोचक प्रवर पं० किशोरीदास बाजपेयी

'भूषण' हुए हैं भव्यभूषण हमारे, और
रत्न जड़ जाते 'कृष्ण' दैव जो न छीनता।'

सुकवि संपादक कविवर पं० गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'

'बावनी' के कवि ने 'भूषण' का ओज पाया था पर शोक! उनकी आयु न पाई। कली मुरझा गई, खिलने न पाई नहीं तो इसकी सुवास से वीर-रस-प्रेमी एक बार अवश्य उन्मत्त हो उठते। यह ओजमयी वाणी सुनकर कायरों की भुजायें भी फड़क उठेंगी। इसमें तड़ित-ज्योति है, घन-घोष है।

काव्यमनीषी डा० 'रसाल'

सत्काव्य की प्रायः सभी प्रमुख विशेषतायें 'बेनी माधव बावनी' में मिलती हैं। रचना में ओज है, जीवन है और प्रभाव है। शब्दावली भावपूर्ण और सशक्त है। पदावली रसमयी और चित्र खींचकर प्रस्तुत करने वाली है। छन्दों का पाठ-प्रवाह बड़ा ही सुन्दर है क्योंकि शब्द संगुंफन सुसंगठित और सुसज्जित है।

वर्तमान भूषण पं० अनूप शर्मा :

कविता में प्रौढ़ता एवं ओज सर्वत्र प्रचुर परिमाण में विद्यमान है। आदि से अन्य तक शैथिल्य का कहीं नाम तक नहीं है। अधिक क्या-

'फिर शुभ भारत धरा का गुरु गौरव हो,
'कृष्ण' से सुकवि 'बेनी माधव' से वीर हों।'

कविरत्न पं० ब्रज किशोर पाण्डेय 'ब्रज नन्दन'

'चातुर मण्डल' के यशस्वी कवि ने 'कवि कृष्ण' एवं 'बावनी' की प्रशस्ति में एक छन्द के माध्यम से मार्मिक, भावमयी एवं संवेदनात्मक टिप्पणी प्रस्तुत कर पुत्रशोक से मर्माहत 'चातुर' जी के पितृहृदय पर सान्त्वना का शीतल लेप लगाया, वह आत्मीयता और कविधर्म का विलक्षण उदाहरण है :

'चातुर जू' सुनो कर्मानुसार लहै मन दुःख सुखादिक द्वन्द्वन।
कोऊ सहायक होत न जीव, वृथा करि मोह फंसे भव फन्दन।
है कवि जो कवि कृष्ण जन्यो, लहिहौ अमरत्व कहै 'ब्रजनन्दन'।
कीर्ति बढ़ावन को सुत के, यह बावन छन्द हैं बावन नन्दन।

'बेनी माधव बावनी' के कतिपय छन्द निम्नवत् प्रस्तुत हैं, जो कवि कृष्ण की प्रतिभा और विलक्षण सामर्थ्य के साक्ष्य हैं :-

'बावनी' के नायक रामा बेनी माधव सिंह का परिचय एवम् महत्व-बोध के प्रसंग में -

हिन्दू हिन्द लाज को अधर्म से बचाता कौन ?
विश्व चमकाता देश भाल का सितारा कौन ?
एकता दिखाता वीर-पथ पै चलाता कौन ?
शत्रुन हिये पै 'कृष्ण' मारता दुधारा कौन ?
आन-बान-शान पै सहर्ष बलिदान होना,
सबको सिखाता दुःखी-दीनन सहारा कौन?
बेनी माधव सिंह जो न लेता अवतार यहाँ,
जानता जहान में बताओ बैसवारा कौन?

राना के निर्भीक साहस और युद्ध कौशल का वर्णन -

होकर स्वतंत्र निःशंक घूमता था रन,
भय भी भयाती भयकारी दिखलाता था।
प्रबल प्रचंड चंड दंड वीरता सों ठोकि
खंड खंड खंग सों अखंड गढ़ ढाता था।
धाक थी समस्त भूमि मंडल खमंडल में

राना बैस बंस मरदाना कहलाता था।
त्राह मचती थी रंच राह बचती थी नहीं?
भेड़ियों में भेड़िया समान घुस जाता था।।
माँ का देख दुःख बांका बीर ने निकाला बांका,
हांका अश्व समर दड़ाका करतूती का।
धड़क रहा था डर, भड़क रहा था जोश,
कड़क रहा था 'कृष्ण' कड़क सपूती का।
घेरि सब नाका, फैर किया है दनाका
बैस-सिंह था लड़ाका औ झड़ाका मजबूती का।
शाका बढ़ा विश्व में, सनाका बढ़ा शत्रुओं में,
विजय पताका फहराया रजपूती का।।

वीर बेनीमाधव के 'सब्जा' घोड़ा का आकर्षक ओजपूर्ण वर्णन -

जौहर जड़ाऊ जीन, जगमग जोतिमयी,
जीन पोश रेशम की चमकत आवै है।
तंग तंग कसत तुरंग अंग रंग आवै,
तंग आवै बैरी जंग जमकत आवै है।
ललित लगाम के लगावत ललकि जात,
घोर घमसान हेतु बमकत आवै है।
ऐंड़दार, आबदार सब्जा सवारदार
टापि टापि टापन सों टपकत आवै है।।

राना की कृपाण के कौशल का ओजस्वी एवं आलंकारिक वर्णन -

म्यान सों कढ़त मान भारत महीपन से
चम्म चम्म चमकि चमू पै चलि जाती है।
एक धार वाली पै त्रि-धार धार देती फल,

दै दै मुंडमाल मुंडमाली को रिझाती है।

खप्पर भराती औ बुझाती प्यास कालिका की,
किन्तु रक्तरंजित पियासी रह जाती है।

जग्ग मग्ग ज्योति सग्ग-बग्ग कर देतीशूर,
डग्ग मग्ग दिग्गज दिगन्त के हिलाती हैं।।

बीर बेनी माधव के रणावतरण का ओजस्वी प्रभावी वर्णन

आयो साजि बाजि बाजि संगर में बेनी बीर,
वीरताई बैरिन की पल ही में ख्वै गई।

रुंड-मुंड झुंड अवलोकि आतताई गन,
अमित अधीर भये धीरताई ध्वै गई।

'कृष्ण' कवि जंग देखि कालिकाहूं दंग भई,
तंग भई अरि सैन तंश संग त्वै गई।
वीरता बिलोकि बैसबंस सिंह बांकुरे की,
जमहू सकाने और मौत मात हूवै गई।।

राना के 'सब्जा' अश्व के युद्ध कौशल की अद्भुत जीवन्त प्रभावपूर्ण प्रस्तुति -

तड़कि तड़ाका सी पड़ाका ज्यों पड़ै है टाप,
धमक धड़ाका धरती के तल लौं भयो।

शेष फन फटकि फुफुकि झुकि झुकि त्यों ही,
रुकि रुकि काहू बिधि आसन लियो नयो।

जौ लौं सहसानन स्व आनन सम्हारै तौलौं
पुहुमी पलटि बैरि वृन्दनि बिलै दयो।

कहाँ लौं बखानौं शूरताई सब्जा की 'कृष्ण'
मारन में जमहूँ सो बाजी मारि लै गयो।।

राना के विजय-आतंक के प्रभाव को प्रकट करने वाला अधोलिखित छन्द

महाकवि भूषण के 'तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती हैं' छन्द का स्मरण कराता है -

साया तन पावतीं न साया तन पावतीं हैं
हैट का लखातीं ते न है टका लखाती हैं।

हिन्द में पताका रहा, हिन्द में पता का रहा,
भारत नपातीं ते वे भार तन पाती हैं।

भूतल दिखातीं शान भू-तल दिखातीं शान,
आन कलपातीं ते न आन कल पातीं हैं।

पाव रोटी पातीं ते न पाव रोटी पातीं 'कृष्ण'
बिस्कुट खातीं ते वे विष-कुट खाती हैं।।

प्रस्तुति : विजय शंकर शुक्ल
कवि 'कृष्ण' के अनुज सहोदर

गुरू कृपा

श्रीमती सुमन शुक्ला
कल्यानपुर, लखनऊ

प्रत्येक हिन्दू के घर में एक पूजा एक पूजा का स्थान अवश्य होता है। पूजा स्थल को सदैव स्वच्छ रखने का प्रयास रहता है। कितने लोग इस तथ्य से परिचित हैं कि इस बाह्य पूजन स्थल से कहीं भव्य पूजन स्थल हमारे मन में भी है। यह पावन स्थल भी अधिकांशतः काम क्रोध लोभ मोह और झूठ की गन्दगी से अस्वच्छ रहता है जिसकी तरफ हमारा ध्यान भी नहीं जाता। इसी की वजह से हम प्रभु को वहां नहीं देख पाहते हैं। इस गंदगी को निकाल फेंकने से मन मंदिर निर्मल हो जाता है। तब ही व्यक्ति भगवत् कृपा का अधिकारी हो पाता है। इस मल को पहचानने की दृष्टि केवल सद्गुरू की कृपा से ही सम्भव है। गुरू कृपा की ज्योति से अंतर्मन में प्रभु को पा सकते हैं। कहते हैं कि गुरू तो प्रभु से महान है। भगवान जो देता है कभी-कभी वापस भी ले लेता है। परन्तु बलिहारी गुरूदेव की जो हमेशा देता ही देता है।

With best compliments from :

NKG INFRASTRUCTURE

NKG Infrastructure Limited

(An ISO 9001:2008, ISO 14001:2004
and
OHSAS 18001:2007 Certified Company)

Regd. Office : 124, Ground Floor, World Trade Centre,
Connaught Place, New Delhi - 110 001
Tel. : 011-23413731, 23413732
Corp. Office : C-32, RDC-Raj Nagar, Ghaziabad (U.P.)
Tel.: +91-120-4537456 **Fax :** +91-120-4100407
E-mail : nkg@nkginfra.com pro@nkginfra.com
Website : www.nkginfra.com

लैंडुडनो में लड्डू, सैक्रामेंटो में समोसा और ब्राजील में बड़ा

महेश चंद्र द्विवेदी
अवकाश प्राप्त, डी.जी.पुलिस

सन् १९८२ की बात है - मैं लंदन में आक्सफर्ड स्ट्रीट के ग्रोसरी स्टोर/जनरल मर्चेंट/में घुसकर पूछ रहा था, "डू यू हैव टंग-स्टिक?" और दूकानदार मुझे ऐसे घूरकर देख रहा था जैसे मैं अभी अभी अजायबघर से लाया गया हूं, फिर वह बोला था, "ह्वाट? अ टंग-स्टिक?" जब मैंने कहा, "यस! ए मेटल और प्लास्टिक स्टिक टु क्लीन दी टंग",

और मैं अपना सिर धुनता हुआ बाहर चला आया था। इस घटना के सोलह वर्ष बाद १९९८ में इंग्लैंड जाने पर न सिर्फ लंदन में टंग-स्टिक की अनेक वैराइटी मिलीं, वरन् ब्रिटेन के पश्चिमी समुद्री किनारे पर वेल्स में स्थित लैंडुडनो कस्बे के एक रेस्टोरेंट में जब मैं मेन्यू पढ़ने लगा तो लड्डू का नाम पढ़कर सुखमय आश्चर्य में डूबने उतराने लगा था। उसके चार साल बाद सैक्रामेंटो/कैलीफोर्निया/ के रेस्ट्रां में समोसा खाने को मिला और ब्राजील के एक जिम में नियमित रूप से होने वाले आसन-प्राणायाम में भाग लेने के उपरांत पास के रेस्ट्रां में बड़ा खाने को मिला। तब मुझे विश्वास हो गया कि सचमुच वैश्वीकरण हो रहा है और देर से आने के बावजूद इंडिया इस दौड़ में अधिक पीछे नहीं है।

सदियों तक विदेशियों के आक्रमण सहने और उनमें पराजय का मुंह देखने के बाद इंडिया के लोग बहुत कुछ घरघुस्सू हो गये थे - यहां तक कि मध्यकाल में यह मान्यता हो गई थी कि विदेश में जाने वाले का धर्मभ्रष्ट हो जाता है और लौटने पर उसका हुक्का-पानी बंद कर दिया जाता था। इस वजह से भारतीय संस्कृति, जो विचारों की स्वतंत्रता एवं सहनशीलता स्वीकार करने में संसार की अप्रतिम संस्कृति है, का ज्ञान एवं प्रसार विदेशों में नहीं हो सका था। पर कमाल है आज के वैश्वीकरण का कि इटली का स्वादिष्ट पीज़ा, चीन और थाइलैंड का लाजवाब सी-फूड, जापान की सूशी मछली, लखनऊ का

मुर्ग-दो-प्याज़ा, चेन्नई का इडली दोशा-यानी कि सभी देशों का सभी कुछ जो लज़ीज़ है - टोरांटो या होनोलूलू के रेस्ट्रां में खाया जा सकता है और स्पेन का टैप-डांस, इंडिया का भारतनाट्यम, रूस का बैले, या ब्राजील का साम्बा लंदन के अलबर्ट हाल में बैठकर देखा जा सकता है; और यदि किसी के पास दूर दराज की यात्रा करने के साधन उपलब्ध नहीं हैं तो वह झुमरी तलैया, याकोहोमा या रियकजैविक/आइसलैंड/में घर में बैठे रहकर इंटरनेट पर इनकी विस्तृत जानकारी कर सकता है और लास वेगस, पर्थ, ब्लाडीवोस्टक से लेकर सैफई तक के मनभावन चित्र देख सकता है।

आज के युवा और वृद्ध-अर्थात वे सभी लोग जो २१वीं सदी के इस घटती दूरी एवं एकीकृत होती संस्कृति के युग में जी रहे हैं-विशेष सौभाग्यशाली हैं। शहंशाह अकबर को अपने शाही जलाल के बावजूद पूरी जिंदगी में जितनी दूर की धरती और प्रकृति के जितने जलवे देखने को मिले होंगे, उतने तो सिर्फ दो-चार हज़ार रुपये खर्च करके अधिकतम एक हफ्ते में कोई ऐरा-गैरा-नत्थू-खैरा देख सकता है। कहते हैं कि एक ग़ज़ल या एक नाच के पसंद आ जाने पर बादशाह अकबर जागीरें लुटा देता था। अच्छा हुआ कि वह आज के ज़माने में नहीं पैदा हुआ, नहीं तो देवदास जैसी एक पिक्चर पर तो अपनी बादशाहत ही लुटा देता और फिर बेचारा दर-दर की ठोकरें खाता फिरता।

खान-पान, जीवन शैली और सभ्यताओं के पारस्परिक सम्मिश्रण का यह एक संक्रमण काल है। यह सच है कि भारत की प्राचीन संस्कृति को पश्चिमी संस्कृति इंटरनेट और टी.वी. के माध्यम से बौम्बार्ड कर रही है और हमारे युवाओं पर पश्चिमी प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, परंतु यह भी सच है कि पश्चिम के लोग जो मिर्च खाने से ऐसे डरते थे जैसे बिच्छू को जुबान पर रख रह हों, अब चटखारे ले-लेकर मिर्ची-पकौड़ी खाने लगे हैं और अगर हम अंग्रेजी सीखने को बेताब हैं तो पश्चिमवासियों की रुचि भी हिंदी में तेजी से बढ़ रही है। संक्रमण काल समाप्त होने पर अवश्य ही एक मिश्रित संस्कृति का उदय होगा। इस मिश्रित संस्कृति में वर्तमान संस्कृतियों के जो सुंदर, लाभकारी एवं सुग्राह्य सिद्धांत होंगे, वे रहेंगे। परंतु यह भी सच है कि ऐग्रेसिव मार्केटिंग के इस युग में मिश्रित संस्कृति में उन संस्कृतियों का अंश अधिक रहेगा, जिनको आज अधिक सक्रियता एवं समझदारी से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर बारम्बार प्रस्तुत किया जायेगा।

सुख शान्ति और आनन्द

साधारणतयः यह तीनों शब्द पर्यायवाची समझे जाते हैं। वास्तविकता है कि यह तीनों अलग हैं और इनके आलम्बन भी भिन्न हैं। सुख शरीर व इन्द्रियों का विषय है। इन्द्रियाँ सुख पाने के लिये सदैव लालायित रहती हैं। परन्तु जिन्हें सुख भरपूर प्राप्त है क्या वह हमेशा सुखी रहते हैं? नहीं! वह और भी अधिक अशान्त और व्यग्र रहते हैं। केवल सुख ही शान्ति और सन्तोष नहीं दे सकता। संतोष मन का व शांति बुद्धि का विषय है। मन चंचल है। आड़ोलित मन संतोष कैसे पा सकता है? इसे बुद्धि द्वारा स्थिर करके ही संतोष की प्राप्ति हो सकती है। संतुष्ट मन से ही शांति प्राप्त होती है। सुख, संतोष और शांति का आलम्बन क्रमशः इंद्रिय, मन, बुद्धि हैं। अस्थायी और जड़ होने की वजह से यह सभी अस्थाई हैं।

आनन्द आत्मा का विषय है और इसी लिये यह चिरस्थायी है। यह बाह्य जगत में ढूंढने से नहीं मिलता। इसे अपने अंदर ही प्रापत करना होता है। यह प्राप्ति, संग्रह और उपभोग के विपरीत त्योग, समर्पण और अपरिग्रह का मार्ग है। आत्मा अजर और अविनाशी है इसीलिये आनन्द भी चिर स्थायी है। पर इसको पाने के लिये इधर उधर भटकने के अलावा एकचित्त आँख बन्द कर एक आसन पर बैठ कर मन और बुद्धि को एकाग्र कर ध्यान में समाधिस्त होने से ही इसकी प्राप्ति सम्भव है। यह कल्पना प्रसूत अलभ्य मोदक नहीं है। इस आनन्द को बुद्ध, महावीर, रामकृष्ण परमहंस, अरविन्द जैसी विभूतियों ने इसे पाया और भगवान शंकर तो स्वयं आनन्दधाम हैं।

आचार्य 'पं. गंगा रत्न पाण्डेय' विरचित पुस्तक
इतिहास के नेपथ्य में' पर आधारित

गोपियों का ऊधव के प्रति कथन

स्याम सनेह में भीजि चुकीं
अब गोपिन ज्ञान को मेह न आये।
ऊधव बास कपूर कहा करै
हींग को गन्ध छिपै न छिपाये।
योग प्रयोग की बात चलाय
बियोगहु को सुख मेटन आये।
छूट्यो निहारिबो चन्द को रूप
चकोर अँगारहु खान न पाये।।

-विजय शंकर शुक्ल

शुभकामनाओं सहित :

बजरंग इन्जीनियर्स

हाजीपुर, आजमगढ़

मोबाइल : 9454844695

नोट : 800 KV, 400 KV, 220 KV लाईनों के स्पेस्लिस्ट

छात्र-वृत्ति पाने वाली छात्रायें

१. दिशांत कुमार मिश्र, कक्षा V, बी.एस.एन.वी. जूनियर हाईस्कूल, चारबाग, लखनऊ ५००/-
स्व० श्रीमती दुर्गावती त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदीजी

२. कु० सुमन मिश्रा, कक्षा IX, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज, चारबाग, लखनऊ ५००/-
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक I (a) प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

३. नीतू शुक्ला, कक्षा IX, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज, चारबाग, लखनऊ ५५०/-
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक II(a) प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

४. नीहारिका मिश्रा, कक्षा IX, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज, चारबाग, लखनऊ ५००/-
स्व. श्रीमती रानी सुभद्रा कुँवर पारितोषिक प्रदत्त स्व. राजा विजय कुमार जी आफ सिसेन्डी

५. दीपाली मिश्रा, कक्षा X, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज, चारबाग, लखनऊ ५००/-
स्व० श्रीमती कादम्बरी देवी मिश्रा पारितोषिक प्रदत्त श्रीमती किशोरी बाजपेई जी

६. काजल द्विवेदी, कक्षा XI, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज, चारबाग, लखनऊ ५००/-
स्व० श्रीमती शकुन्तला मिश्रा पारितोषिक प्रदत्त मा.श्री सतीश चन्द्र मिश्र, सदस्य राज्यसभा

७. श्रद्धा त्रिपाठी, कक्षा XI, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज, चारबाग, लखनऊ ५००/-
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक I (b) प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

८. गुंजन तिवारी, कक्षा XI, विष्णुनगर शिक्षा निकेतन कन्या इंटर कालेज, खुर्शेदबाग, लखनऊ ५५०/-
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक II(b) प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

९. आकांक्षा शुक्ला, कक्षा VI, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इंटर कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ १०००/-
स्व० श्री बांके बिहारी मिश्र जी (पितामह) पारितोषिक प्रदत्त डा.एल.पी.मिश्र,सीनियर एड.

१०. वैष्णवी बाजपेई, कक्षा VII, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इं० कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ १०००/-
स्व० श्री बांके बिहारी मिश्र जी (पितामह) पारितोषिक प्रदत्त डा.एल.पी.मिश्र,सीनियर एड.

११. शेफाली मिश्रा, कक्षा XII, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इं० कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ १०००/-
स्व० श्री बांके बिहारी मिश्र जी (पितामह) पारितोषिक प्रदत्त डा.एल.पी.मिश्र,सीनियर एड.

१२. प्रज्ञा त्रिपाठी, कक्षा XI, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इं० कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ ५५०/-
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक I प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

१३. शुभी अवस्थी, कक्षा XI, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इं० कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ ५००/-
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक II प्रदत्त श्री ज्ञान बाजपेई

१४. क्षमा बाजपेई, कक्षा XII, अर्जुनगंज विद्या मंदिर इं० कालेज, अर्जुनगंज, लखनऊ १०००/-
स्व० श्रीमती रामा देवी पारितोषिक प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र

१५. लक्ष्मी शुक्ला, कक्षा B.A. II, शशिभूषण गर्ल्स डिग्री कालेज, लालकुँआ, लखनऊ ५००/-
स्व० पं० जयशंकर मिश्र पारितोषिक प्रदत्त सुश्री प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, एडवोकेट

१६. दिव्या बाजपेई, कक्षा B.A. I, शशिभूषण गर्ल्स डिग्री कालेज, लालकुँआ, लखनऊ
विशेष छात्रवृत्ति

जातीय पत्रिकाओं की सार्थकता

शैल नाथ चतुर्वेदी

१९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश राज की स्थापना के साथ अंग्रेजी शिक्षा और पश्चिम के राजनीतिक दर्शन का हिन्दी क्षेत्र में प्रवेश हुआ। इसके कारण नवजागरण की लहर उठी जो १९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रेसीडेन्सी नगरों कोलकाता, मद्रास (चेन्नई) एवं मुंबई को आप्लावित कर चुकी थी और जिसके परिणामस्वरूप पहले सामाजिक और बाद में राजनीतिक चेतना जाग्रत हुई। अंग्रेजों के शासन काल में आधुनिक शिक्षा, नये व्यवसायों-अध्यापक, वकील, डाक्टर, इंजीनियरिंग, कारखाने, सरकारी सेवा - ने उस वर्ग को जन्म दिया जो मध्य वर्ग कहलाता है। इस वर्ग के कुछ लोगों में बहुत सी सामाजिक प्रथाओं को समाप्त करने या उनमें सुधार लाने की प्रबल इच्छा जगी। उस युग में जाति समूह समाज की इकाई थे, अतः सुधारवादियों ने अपनी-अपनी जाति में सुधार लाने का प्रयत्न आरम्भ किया। इस दिशा में सबसे पहले पहल करने वाले दो जाति समूह थे - कश्मीरी पंडित और कायस्थ। अपनी जाति बिरादरी में सुधार की चेतना लाने के लिये दोनों ने पत्रिकाएं प्रकाशित करना आरम्भ किया। कालान्तर में अन्य जाति समूहों यथा जैन समुदाय, कान्यकुब्ज, सरयूपारी, सारस्वत, गौड़ हैहय क्षत्रिय, कूर्म क्षत्रिय, वैश्य आदि ने अपने संगठन बनाये और पत्रिकाएं निकालीं।

इन पत्रिकाओं की एक समान विशेषता यह है कि उनका उद्‌देश्य अपने-अपने जाति समूहों की सामाजिक बुराइयों को दूर करना और शिक्षा का प्रसार करना था। साथ ही ये पत्रिकाएं किसी भी मानक से 'जातिवादी' नहीं थीं। इस प्रसंग की विस्तृत चर्चा न करके मैं अपने कथन की पुष्टि के लिय कुछ जातीय पत्रिकाओं के आदर्श वाक्यों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। पहले, देखें जैन गजट (१८९५) जिसका आदर्श वाक्य 'हितोपदेश' से लिया गया है -

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

उसी का जन्म लेना सफल है जिसने अपने वंश (जाति) की उन्नति में योगदान किया हो, इस नश्वर संसार में कौन नहीं जन्म लेता और मरता है।'

इसके साथ यह बताना आवश्यक है कि १९वीं शताब्दी में अंग्रेजी शब्द 'नेशन' का हिन्दी अनुवाद 'जाति' किया जाता था। आज भी बांग्ला और असमिया भाषाओं में 'नेशन' के लिये 'जाति' शब्द का ही प्रयोग किया जाता है।

कान्यकुब्ज सभा कानपुर के मासिक पत्र 'श्री कान्यकुब्ज हितकारी' तथा 'भूमिहार' ब्राह्मण पत्रिका का भी यही नीतिवाक्य था। 'वैश्योपकारक' ने नीतिवाक्य के रूप में तुलसीदास की यह पंक्तियां चुनी थीं-

परहित बस जिन्ह के मन माहीं।
तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नहीं।।

'कान्यकुब्ज' नामक पत्रिका ने 'गीता' से अपना आदर्श वाक्य लिया था -

यतो धर्मस्ततो जयः

जहाँ धर्म (न्याय) है, उसी पक्ष को विजय मिलती है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाना चाहिए कि सामाजिक सुधार की पहली लहर में (१९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध और २०वीं के आरम्भिक दशकों में) जातीय पत्रिकाएं (और संगठन) 'जातिवाद' को बढ़ाने के लिये नहीं आरम्भ की गयी थीं, उनका उद्‌देश्य अपनी जाति में सुधार लाना था। मेरे मन में प्रश्न यह उठता है कि आज की बदली हुई परिस्थिति में जातीय पत्रिकाओं (और संगठनों की भी) की क्या भूमिका हो सकती है ? एक शताब्दी से अधिक वर्ष पूर्व कान्यकुब्ज जैसे जाति समूहों में आधुनिक शिक्षा एवं नये व्यवसायों का आकर्षण और उसके परिणामस्वरूप नगरों की ओर पलायन का सिलसिला आरम्भ हुआ था। आज इन समूहों के सदस्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि उनके सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध में किसी प्रकार के नियंत्रण या नियमबद्ध करने की बात सोची भी नहीं जा सकती। ये जाति समूह शत-प्रतिशत शिक्षित हैं और उनके बहुसंख्य सदस्य उच्च शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा प्राप्तकर बड़े-बड़े नगरों महानगरों में निवास कर रहे हैं। नगरीय जीवन ने उनमें जातिबोध अतिक्षीण कर दिया है। समाज-सुधार जैसी बातें उनके लिए अप्रासंगिक हो गयी हैं। इस स्थिति में जातीय पत्रिकाओं की सार्थकता का प्रश्न

बड़ा महत्वपूर्ण है। इस पर विचार करना आवश्यक है।

मुझे लगता है कि नगरकेन्द्रित जाति समूहों का जातिबोध क्षीण हो जाने पर भी अभी जीवित है। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में जातिवादी राजनीतिक दलों के बढ़ते प्रभाव के कारण क्षीणता की गति कम अवश्य हो गयी है परन्तु इन जाति समूहों के सदस्य किसी प्रकार के जातीय नियंत्रण के अभ्यस्त नहीं रह गये हैं और न इन्हें किसी प्रकार के सामाजिक सुधार की आवश्यकता है। वे अपने समस्त सामाजिक कार्य-विवाह आदि संस्कार अपनी इच्छानुसार और अपने ढंग से करते हैं। इस दशा में जातीय पत्रिकाएं तीन प्रयोजनों से अपनी सार्थकता बनाये रख सकती हैं। प्रथम, प्रत्येक जाति में शौकिया लिखने वाले बहुत से लोगों को अपनी रचनाएं प्रकाशित करने का अवसर नहीं मिलता। जातीय पत्रिका इन्हें वह अवसर प्रदान कर सकती है। दूसरे, स्वास्थ्य, पर्यावरण, समाज-देश के लिये उपयोगी विषयों पर लेख प्रकाशित कर पत्रिका कान्यकुब्ज समूह को वृहत् भारतीय समाज की इकाई के रूप में जागरूक बनाये रख सकती है। तीसरे, कान्यकुब्ज समाज के दिवंगत और जीवित ऐसे व्यक्तियों का परिचयात्मक विवरण नियमित रूप से प्रकाशित कर सकती है जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान किया है, सदाचार, कर्तव्यपरायणता, निष्ठा, परोपकार, उदारता जैसे मूल्यों के साथ जीवन जिया है। ये मूल्य भारतीय समाज के आदर्श रहे हैं, वर्तमान पीढ़ी जाने तो कि यह मूल्य कागजी या कोरे आदर्श नहीं हैं। इन्हें जिया जाता है, उनको जीने वाले हमारी-आपकी तरह हांड-मांस के लोग हैं, जिन्होंने अपने आचरण से यश, प्रतिष्ठा और सम्मान सब कुछ प्राप्त किया है।

अन्त में, जातीय पत्रिकाओं में विवाह योग्य युवक-युवतियों के विवरण का प्रकाशन बड़ा उपयोगी है। इस प्रकार पत्रिका वर्तमान में दूर-दूर बसने वाले परिवारों के बीच सम्पर्क-सूत्र का काम करेगी।

जातीय पत्रिकाओं को नयी दृष्टि से अपना उद्देश्य तय करना होगा अन्यथा वह नये युग और नयी परिस्थिति के लिये अप्रासंगिक होंगी। सुखद यह है कि 'कान्यकुब्ज वाणी' के प्राप्त अंकों की सामग्री लगभग वैसी ही है जैसी आज किसी जातीय पत्रिका से अपेक्षित है। आशा है, भारतीय समाज के एक महत्वपूर्ण घटक कान्यकुब्ज समुदाय के सांस्कृतिक व्यक्तित्व को बनाये रखने में यह पत्रिका सहायक होगी।

गौरवमयी कान्यकुब्ज गरिमा महिमा

निर्जन पथ पर चला जा रहा
सहसा विद्युत सी कौंध गई
स्मृति की मधुर लहरियाँ भी
मस्तिष्क परिधि में अठखेल गई
तुम्हें पता नहीं क्या ?
कितने दबे पड़े गौरवमय इतिहास
जिसे ध्वंसावशेष की गरिमा
बता रहे अतीत का राज
इसका है "राज गिरि द्वार" साक्षी
आंचल गङ्ग कालिन्दी धार
देवि-देवालय छटा दे रहे
दृश्यमान नैसर्गिक लगता, पहराया दिव्योपम हार
यही तपोवन (नृप गाधि तनया) विश्वमित्र का
कई हुए विभूतिक अवतार
सम्राट हर्ष राज्य में हर्षित थे जनगण
नहीं था जिसका पारावार
ओजस्वनि कन्याओं के नाम से
अब जाना जाता है "कन्नौज"
इतने चढ़ाव उतार के बावजूद भी
इसकी सुरभित बयार बही सब ओर
गर्व से कहें ये वचन
कान्म कुब्ज के वंशज हम
पारम्परिक देन, धरम करम
जहाँ भी रहें यहां के स्वजन
ये ही राहे वचन भजन
महातीर्थ कान्यकुब्ज को हमारा नमन

ब्रह्मानन्द दुबे, कन्नौज
५ मई २०१२

With best compliments from :

Prop. - Jitendra Kumar Shukla

Monu Engineering Works

Govt. Contractor, Electricals,
General Order Supplier
& Job Works

84/10B, Tilak Nagar, Allahpur, Allahabad

Mob. : 9415305185

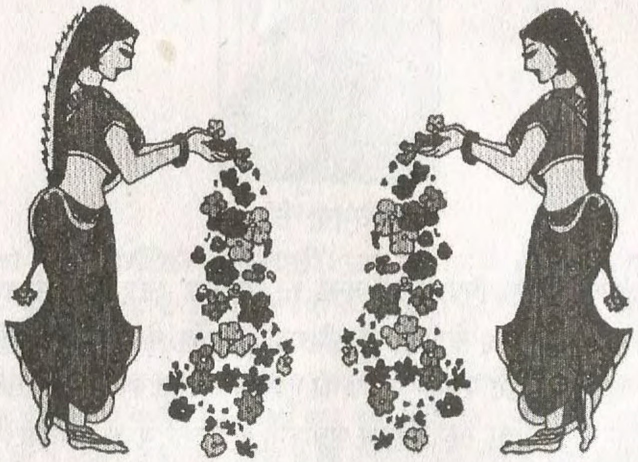

श्रद्धान्जलि

इनको न भूल पायेंगे

स्व० विनया त्रिपाठी - पत्नी डा० पी० पी० त्रिपाठी

स्व० यू० डी० शुक्ला - पिता डा० डी० एस० शुक्ल

स्व० विनया त्रिपाठी

श्रीमती विनया त्रिपाठी का जन्म १८ सितम्बर १६३५ को सीतापुर में हुआ। इनके पिता पं० योगीन्द्र दत्त त्रिपाठी आयुर्वेद के विद्वान थे। विनया त्रिपाठी की शादी वसंत पंचमी १६६४ को हुई इस समय इनके पिता ललित हरि आयुर्वेदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय पीलीभीत के प्राचार्य थे तथा विनया त्रिपाठी इसी कालेज में **BAMS** की छात्रा थी। शादी के बाद **B.A.MS** की पढ़ाई पूरी नहीं हो पाई। पति वीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ **Palaeobotany** लखनऊ में शोध छात्र थे अतः लखनऊ और फिर **M.N.K.** कालेज बलरामपुर रहना पड़ा। इसी विद्यालय से इन्होंने **B.A.** तथा **M.A.** शिक्षा शास्त्र की डिग्री प्राप्त की। बलरामपुर में रहते हुए इन्होंने मेरे साथ **Plant Collection** के लिए शिलांग, असम (गौहाटी) दार्जिलिंग, नैनीताल, शिमला, महावलेश्वर आदि स्थानों का भ्रमण किया।

इनकी दो लड़कियाँ श्रीमती प्रीति तिवारी और श्रीमती अर्चना पाण्डे हैं। एक पुत्र डा० प्रांजल त्रिपाठी तथा पत्नी डा० निधि त्रिपाठी तथा इनके एक पुत्र चि० पुष्कर त्रिपाठी और लड़की चि० अर्पिता त्रिपाठी का भरा पूरा परिवार था। अचानक २३ जून २००८ को लगभग ८.०० बजे सुबह श्रीमती विनया त्रिपाठी को **Heart attack** पड़ा और फिर इन्हें बचाया न जा सका।

डा० पी०पी० त्रिपाठी
Emeritus Professor
Ex. Head of Deptt.
Degree College, Balrampur

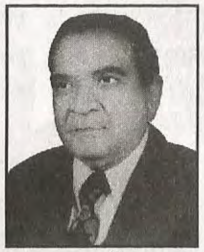

स्व० यू. डी. शुक्ल
(March 1924-15 July 1988)

"जो इच्छा करिहौ मन माहीं। प्रभु प्रताप कछु दुर्लभ नाहीं"

मानस की यह चौपाई श्री शुक्ल जी के जीवन का मूल मंत्र रही है। यह पंक्तियां नेपोलियन की उक्ति **"Nothing is impossible in the world"** का विशुद्ध भारतीयकरण है। इस मूल मंत्र में स्वप्न, संकल्प और संघर्ष के साथ सफलता के लिये भगवत् कृपा भी सम्मिलित है। भगवत् कृपा तभी होगी जब संकल्प कल्याणकारी हो। शुक्ल जी के जानने वालों का मानना है कि उन्होंने जिस कार्य में हाथ डाला वह पूर्ण अवश्य हुआ। इन कार्यों में अधिकतर परहित थे।

रायबरेली के एक युवा पत्रकार ने उनके जीवन में ही टिप्पणी की थी कि शुक्ल जी के पास जब कोई कार्य लेकर जाता है तो ७५ प्रतिशत कार्य उनके स्वयं के प्रभाव एवं प्रयास से सम्पन्न हो जाते हैं बाकी २० प्रतिशत के लिये वह रास्ता सुझा देते थे। बाकी बचे ५ प्रतिशत जो सम्पन्न नहीं हो पाते उन पर शायद भगवत् कृपा नहीं होती थी।

बचपन में पिता के कठोर अनुशासन के कारण अनुशासित रहने के आदी थे। साकेत महाकाव्य का "पंचवटी" सर्ग इन्हें कंठस्थ था। बड़े सुन्दर स्वर में उसका पाठ करते थे। क्यों न हो इनके परिवार पर लक्ष्मी और सरस्वती की पूर्ण कृपा थी। पूरे परिवार में काव्यमय वातावरण था। अतएव खुद भी छोटी मोटी रचनायें बचपन से लिखते थे। २० वर्ष की उम्र में लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए., एल.एल.बी. पास किया। अगले चार वर्षों तक रायबरेली में ही वकालत की और ए पी ओ के रूप में भी कार्य किया।

सन् १६४६ में जुडिशियल मैजिस्ट्रेट बनकर पहली तैनाती शाहजहाँपुर हुई। शाहजहाँपुर में सन् ५२ में उन्हें प्रतिनियुक्ति पर डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग आफिसर बनाया गया। प्लानिंग आफिसर ज़िले के सभी विकास कार्य के लिये उत्तरदायी होता था जो कार्य आजकल सी डी ओ के ज़िम्मे है। शाहजहांपुर जनपद में यहां ४६ से ५७ तक रहे। इस कार्यकाल में शाहजहांपुर जनपद विकास कार्यों में कई बार प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहा।

सम्भवतः न्यायिक सेवा में श्री शुक्ल जी ही ऐसे अधिकारी थे जिनको स्वच्छ छवि की वजह में अपने गृह जनपद में कार्य करने का मौका मिला। आपने उत्तर प्रदेश में केवल आगरा को छोड़ कर बाकी सभी कवाल टाउन में ए डी एम जे, सी जे एम और अतिरिक्त जनपद न्यायाधीश के पद पर कार्य किया। राजधानी लखनऊ में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बेन्च में अतिरिक्त रजिस्ट्रार के पद पर भी कार्य किया और ३१ मार्च १९८३ को कार्य वाहक जनपद न्यायाधीश बाराबंकी के पद से सेवा निवृत्त हुए। बाराबंकी शुक्ल जी की जन्म स्थली भी थी।

सेवा निवृत्ति के बाद लगभग ५ साल तक हाईकोर्ट में प्रैक्टिस की तथा आई. टी.आई. रायबरेली के हाईकोर्ट में स्थाई अधिवक्ता भी रहे।

आजीवन अपने परिवार के सभी सदस्यों के प्रति इनका अत्यधिक लगाव था। छोटे भाइयों और एकलौती बहन के लिये वात्सल्य की अनुभूति रखते थे। वह सब भी इन्हें पितृ तुल्य सम्मान देते थे। भाइयों में इतना सौहार्द अमूमन कम पाया जाता है।

जीवन पर्यन्त अपने पिता के आज्ञाकारी रहे। शायद ही ऐसी कोई पिता की इच्छा हो जो इन्होंने पूर्ण न की हो। सन् ५२ में इनके पिता को हाई ब्लड प्रेशर हुआ तो उनके इलाज के लिये वह शाहजहाँपुर से आकर लखनऊ के प्रख्यात फिजिशियन डा० नाटू को लेकर रायबरेली आते थे। लगभग एक वर्ष के बाद पिता को स्वास्थ लाभ हुआ। कठिन जुडिशियल मसलों पर इनके पिता जो कि स्वयं जिला जज रह चुके थे इनका मार्ग दर्शन करते थे। पिता की मृत्यु के बाद भी जब शुक्ल जी किसी परेशानी में होते थे तो इनके पिता स्वप्न में मार्ग दर्शन देते थे। ऐसी अटूट निष्ठा थी इनकी अपने पिता पर।

श्री शुक्ल जी बाबा विश्वनाथ माँ अन्नपूर्णा एवं उज्जैन के महाकाल जी के अनन्य भक्त थे जब भी मौका मिलता तो इन देवालयों में जाकर अपने को पुनः स्फूर्त एवं ओजस्वी महसूस करते थे। अक्टूबर ८७ में अन्तिम बार महाकाल के दर्शन करने उज्जैन गये। उसके साल भर के अन्दर ही १५ जुलाई ८८ को अपने पुत्र के बलरामपुर अस्पताल स्थित आवास पर गये। अस्पताल में कार पार्क करने के बाद रास्ते में श्री आर. पी. अवस्थी एडवोकेट व कुछ परिचित डाक्टरों से बात की। परन्तु पुत्र के आवास के थोड़ा पहले ही मूर्छित हो गये तथा 'उर्वारुकमिव' जीवन और मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो गये। गहन चिकित्सा कक्ष की सुविधा, अस्पताल के सभी विशेषज्ञ यहां तक कि स्वयं उनका डाक्टर पुत्र भी उन्हें नहीं बचा सके।

सत्य है बीमारी का इलाज है मृत्यु का नहीं। ईश्वर ऐसी सुन्दर मृत्यु बिरले लोगों को ही प्रदान करता है।

श्रद्धावनत
पुत्र
डा० डी० एस० शुक्ल

शुभकामनाओं सहित :

आयुर्वेद : आयु यानि जीवन, वेद यानि ज्ञान

ममता आयुर्वेदिक एजेन्सीज

एस 6/132, आजाद मार्केट, एच.ए.एल. गेट के सामने,
इन्दिरा नगर, लखनऊ फोन 0522-2344328

उच्च कोटि की आयुर्वेदिक एवम यूनानी औषधियों हेतु पधारें।

वैद्यों के नुस्खे बनाने की सुविधा उपलब्ध है।

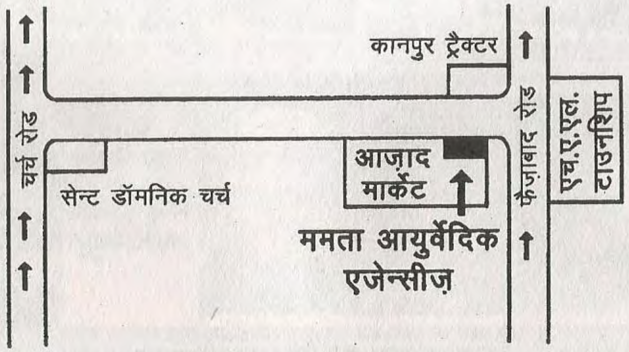

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for life membership of Kanyakubja Sabha/ Kanyakunj Vaani magazine

1. **Name of Member :** ....
2. **Age :** ....
3. **Gotra :** ....
4. **Father's/Husband's Name :** ....
5. **Address :** ....
   ....
6. **Landline/Mobile No.:** ....
7. **Email :** ....
8. **Name of spouse / Father's Name :** ....
9 **Education :** ....
10. **Occupation (Post / Designation):**

Unmarried Children	Name	Age	Education	Job
a)	....			
b)	....			
c)	....			

11. **Any other information :**

I want to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow/Kanyakubja Vaani** and willing to pay Rs. ....in Cash/Cheque No. .... Name of Bank .... favouring *"Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow" payable at Lucknow.*

12. **Name of person introducing :** ....

Date :

(Signature)

..........✂..........✂..........✂..........

Reciept

Received with thanks Rs. .... in Cash / Cheque No. .... Name of Bank .... from .... who wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow / Kanyakubja Vaani.**

(Signature)

Note :
1. Contribution for life member of **Kanyakubja Sabha** is **Rs. 300/-**
2. Contribution for life membership of **Kanaykubja Vaani** is **Rs. 1000/-**
3. Contribution for one issue of **Kanyakubja Vaani** is **Rs. 25/- + postage charges.**

2013

TIN No. 09621801136

N.P.

N.P. ELECTRICAL ENTERPRISES

8/9/19, Begamganj, Makbara Road,

Faizabad (U.P.)

Mob.: 9415122803

Govt. Contractor & General Order Supplier

झलकियाँ

अतिथियों का स्वागत

पुस्तक प्रदर्शनी

सचिव का सम्मान

उपाध्यक्ष का सम्मान

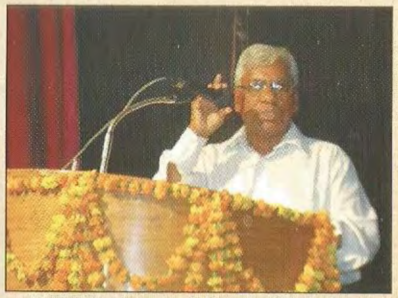
डा० एम०डी० त्रिपाठी, प्रिंसिपल, मेडिकल कालेज

श्री आर०यू० शुक्ल

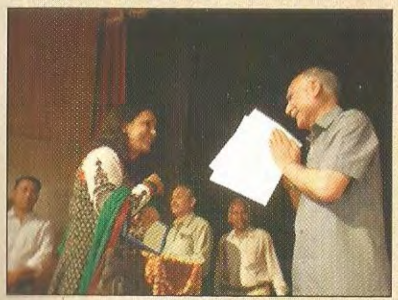
कम्प्यूटर स्कालरशिप देते हुए
श्रीमती निष्ठा एवं अमिताभ मिश्र

पत्रिका का विमोचन

2012 की झलकियाँ

पुरस्कृत छात्राएं

स्वागत

माननीय सदस्य एवं उनके परिवार

सांस्कृतिक कार्यक्रम में होली गायन देवेश चतुर्वेदी

पुरस्कृत छात्राएं साइकिलों के साथ

5-6 मई 2012 को ग्राम-अकबरपुर, जिला-हरदोई में नभ-संस्थान में आयोजित मेडिकल कैम्प

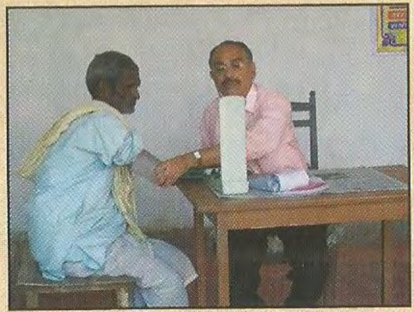

डा० शुक्ला

डा० मुकुल बाजपेई

परीक्षण करते हुए

Printed by : Printoo Printers, 22, Jagat Narain Road, Lucknow. Ph.: 0522-4105512